सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन

सफलता की कहानियाँ

भाग-१

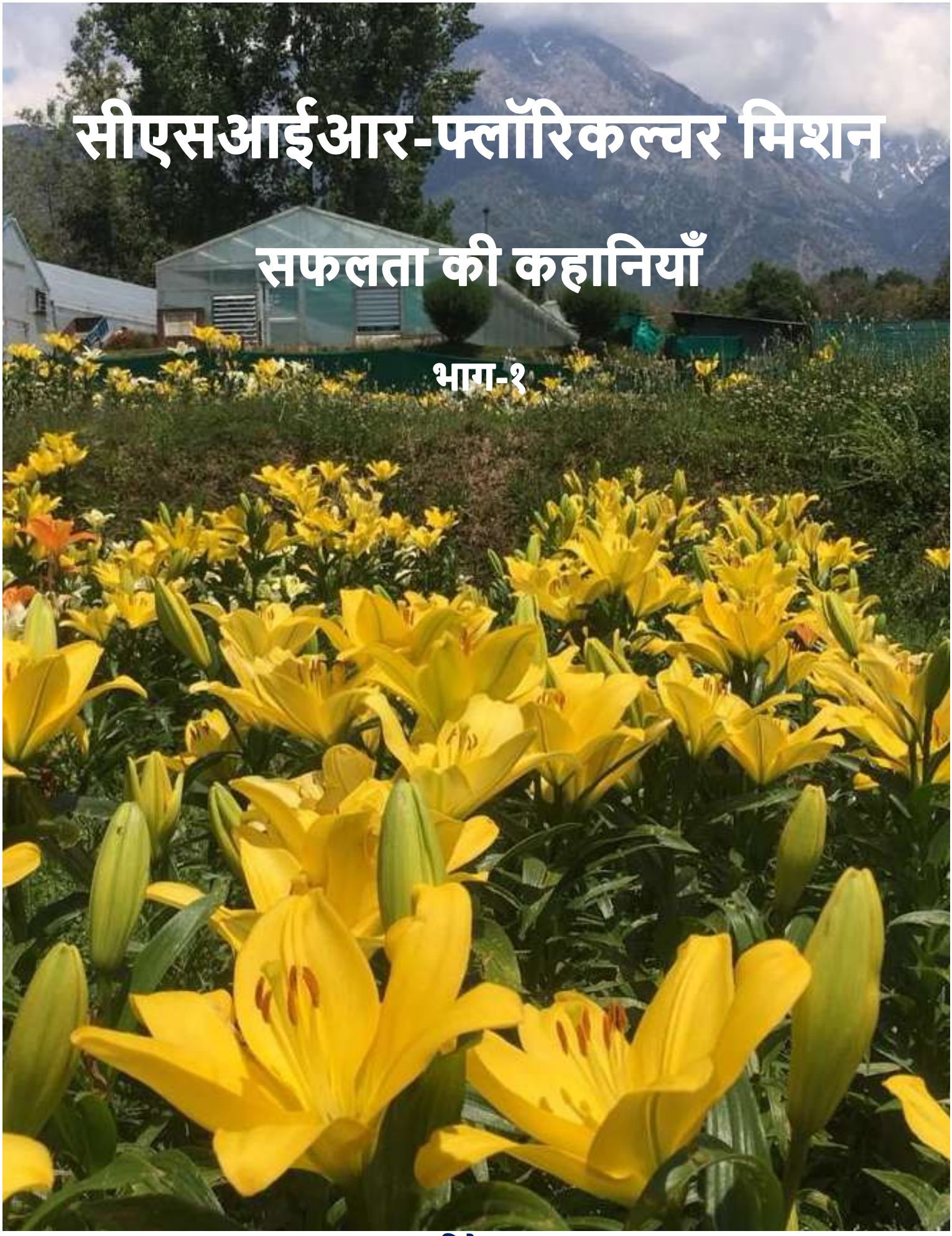

निदेशक
सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान
CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology
पालमपुर-176 061 (हि.प्र.) / Palampur-176 061 (H.P.)

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन

सफलता की कहानियाँ

भाग-१

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-176061 (हि.प्र.)

CSIR-INSTITUTE OF HIMALAYAN BIORESOURCE TECHNOLOGY PALAMPUR- 176 061 (H.P.)

2024

© सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर (हि. प्र.)

प्रकाशन की तारीख: 13 मई 2024

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर-176061 (हि.प्र.), भारत द्वारा प्रकाशित
फोन: +91-1894-230411, fax: +91-1894-230433
ईमेल: director@ihbt.res.in; वेब: http://ihbt.res.in

भव्य भार्गव • विकास सोनी

आवरण फोटो:
सामने: लिलीयम
पिछला पृष्ठ: निदेशालय, सीएसआईआर-आईएचबीटी

अस्वीकरण

यह प्रकाशन छात्रों, उत्पादकों, उद्यमियों और फूलों की फसलों में रुचि रखने वाले लोगों के उपयोग के लिए है। हालांकि, खेती, अनुसंधान और अन्य अनुप्रयोगों के लिए इस जानकारी के उपयोग के लिए पेशेवरों और विशेषज्ञों से विस्तृत साहित्य खोज और सलाह की आवश्यकता होगी।

प्रस्तावना

खेती की दुनिया में फूलों की खेती एक जीवंत उदाहरण है, जो सुंदरता और आजीविका को एक साथ जोड़ती है। "सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन सफलता की कहानियाँ" इस नाजुक कला और विज्ञान के पोषण के लिए प्रतिबद्ध व्यक्तियों और संगठनों के अथक प्रयासों, नवीन भावना और अटूट समर्पण का एक प्रमाण है।

इन पन्नों में सफलताओं की कहानियाँ छिपी हैं, जहाँ जिज्ञासा के बीज, उपलब्धि के फूलों में बदल जाते हैं। जैसे ही हम सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन की उपलब्धियों को देखते हैं, हमें अनुसंधान, सहयोग और दृढ़ता की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव होता है।

उपजाऊ खेतों से जहां विचार जड़ें जमाते हैं, हलचल भरे बाज़ारों तक जहां फूलों को उनके प्रशंसक मिल जाते हैं, प्रत्येक सफलता की कहानी फूलों की खेती के जटिल पारिस्थितिकी तंत्र को उजागर करती है। यह पुस्तक वैज्ञानिकों की सरलता, किसानों के लचीलेपन और राज्यों में उत्साही लोगों द्वारा साझा किए गए विचारों को बताती है।

पंखुड़ियों और तनों से परे, यह पुस्तक एक बड़े राग को प्रतिध्वनित करती है - स्थिरता, आर्थिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संवर्धन की एक समता। यह उस गहरे प्रभाव को रेखांकित करता है जो प्रकृति के साथ समुदायों में सामंजस्यपूर्ण संबंध पैदा करता है।

जैसे ही हम खोज की इस यात्रा पर आगे बढ़ते हैं, आइए हम इन पन्नों की कहानियों से प्रेरित हों। वे प्रेरणा के बीज के रूप में काम करें, सपनों का पोषण करें और फूलों की खेती तथा इससे जुड़े सभी क्षेत्रों के लिए एक उज्जवल, अधिक जीवंत भविष्य विकसित करें। इस पुस्तिका के रूप में 50 किसानों की जानकारी शामिल की गयी है। मुझे आशा है कि यह संकलन छात्रों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, किसानों, पर्यटकों, उद्यमियों एवं अन्य लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, और व्यापक स्तर पर पुष्प खेती उद्योग को बढ़ावा देने में सहायक होगा।

सुदेश कुमार यादव

दिनांक: 13 मई 2024

निदेशक

आमुख

"सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन-सफलता की कहानियाँ" में आपका स्वागत है।

फूलों ने अपनी नाजुक सुंदरता और मनमोहक सुगंध से मानवता को सदियों से मोहित किया है। लेकिन उनके आकर्षण के पीछे वैज्ञानिकी अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और कृषि संबंधी सरलता की दुनिया छिपी है। सीएसआईआर फ्लोरीकल्चर मिशन कला और विज्ञान के इस मिश्रण का एक प्रमाण है, जिसका उद्देश्य प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके उच्च मूल्य वाले फूलों की खेती के माध्यम से किसानों की आय और उद्यमिता विकास को बढ़ाना है।

यह पुस्तक सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के आरंभ से लेकर उसके फलीभूत होने तक की उल्लेखनीय यात्रा का विवरण देती है। प्रेरक कथाओं के संग्रह के माध्यम से, यह उन व्यक्तियों और संस्थानों के समर्पण, दृढ़ता और सहयोगात्मक भावना को प्रदर्शित करता है जिन्होंने इसकी सफलता में योगदान दिया है।

जैसे-जैसे आप पन्ने पलटेंगे, आपको निर्णायक अनुसंधान, टिकाऊ खेती और उद्यमशीलता प्रयासों की कहानियां मिलेंगी, जिन्होंने भारत में फूलों की खेती के परिदृश्य को आकार दिया है। फूलों की नई किस्मों के विकास से लेकर अत्याधुनिक खेती तकनीकों को अपनाने तक, प्रत्येक सफलता की कहानी; किसानों, व्यवसायों और पर्यावरण पर मिशन के प्रभाव पर प्रकाश डालती है।

लेकिन प्रशंसा और उपलब्धियों से परे, यह पुस्तक वैज्ञानिकों और किसानों, नीति निर्माताओ, अभ्यासकर्ताओं, समुदायों व बाजारों के बीच साझेदारी का उत्सव है। यह जटिल चुनौतियों से निपटने और वृद्धि एवं विकास के अवसरों को खोजने में सहयोग की परिवर्तनकारी शक्ति को रेखांकित करता है।

चाहे आप एक अनुभवी फूलों की खेती करने वाले हों, एक उभरते उद्यमी हों, या प्रकृति की सुंदरता के प्रति उत्साही हों, "सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन-सफलता की कहानियाँ" फूलों की खेती के नवाचार की अग्रिम पंक्ति से सीखी गई अंतर्दृष्टि, प्रेरणा और सबक प्रदान करती है।

लेखक, लगातार प्रेरणा और समर्थन के लिए निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर, डॉ सुदेश कुमार यादव के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। हमें पुस्तक लिखने में मदद के लिए मेहुल ठाकुर, हिमांशी गुप्ता, अंजलि चंदेल, डॉ. सुखचैन सिंह, दीप्ति, छेरींग यौदोन, दीक्षा शर्मा, नीरज, दीक्षा ठाकुर, सौरभ कुमार, शगुन राणा और श्री बलवंत राज, लैब अटेंडेंट, कृषिप्रौद्योगिकी विभाग के भी शुक्रगुजार हैं।

हम आपको फूलों की खेती की अप्रयुक्त क्षमता का पता लगाने और सभी के लिए अधिक जीवंत, टिकाऊ और समावेशी भविष्य के निर्माण में हाथ मिलाने के लिए हमारे साथ इस यात्रा पर जाने के लिए आमंत्रित करते हैं।

दिनांक: 13 मई 2024

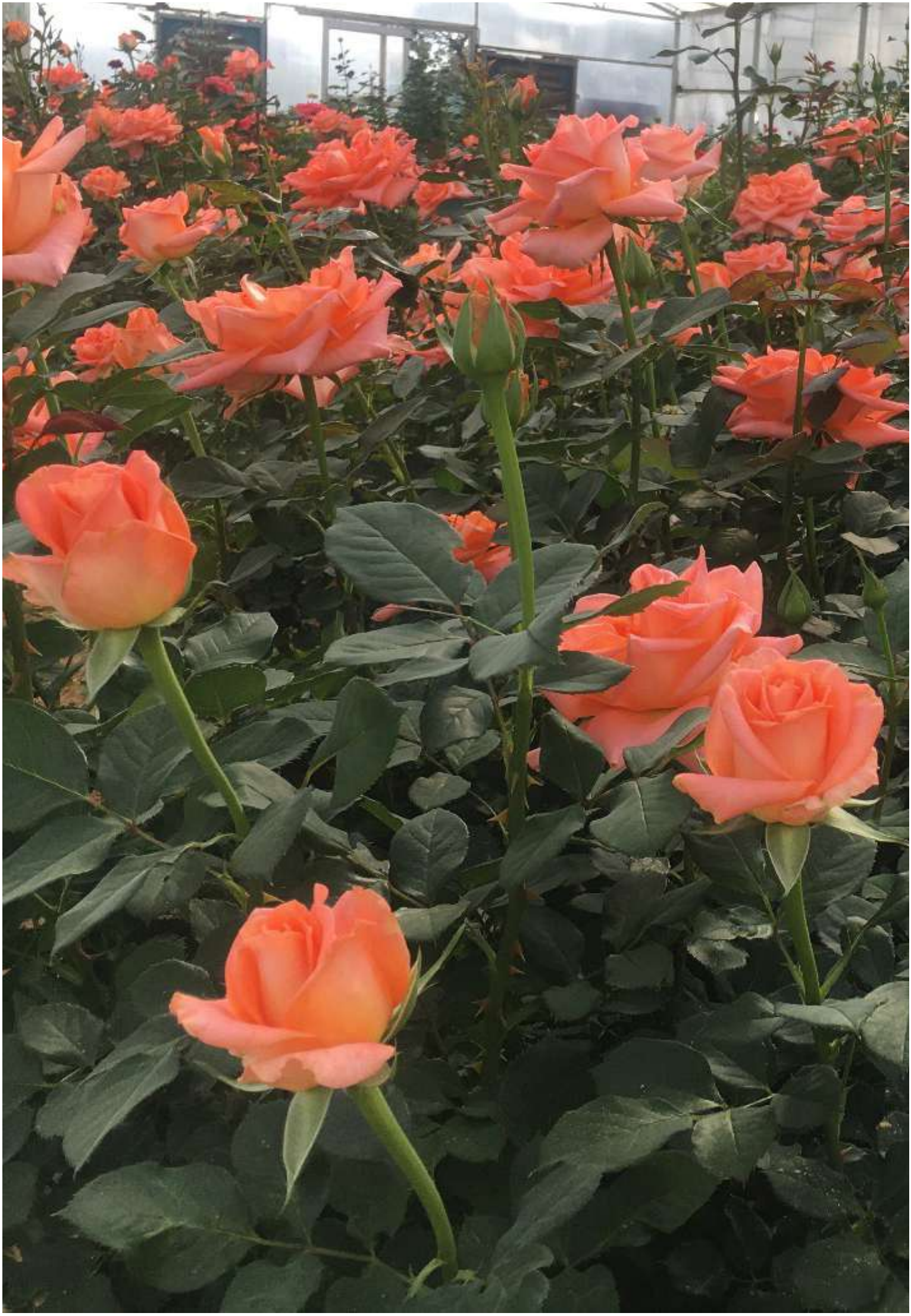

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन: परिचय

फूलों की खेती एक तेजी से बढ़ने वाला उद्योग है जो सजावटी फसलों की खेती से संबंधित है। फूलों की खेती की सफलता के लिए नई किस्मों का विकास, खेती, विपणन और मूल्यवर्धित उत्पाद आवश्यक हैं। वैश्विक पुष्पकृषि व्यवसाय प्रति वर्ष 6-10% की दर से बढ़ रहा है। भारत फूलों की खेती के व्यापार में 18वें स्थान पर है और वैश्विक फूलों की खेती के व्यापार में इसकी हिस्सेदारी केवल 0.61 प्रतिशत है। घरेलू भारतीय बाज़ार प्रति वर्ष 20 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है।

भारत में विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ, फूलों की फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला की खेती के लिए अनुकूल हैं। खेती के लिए जनशक्ति की उपलब्धता और महानगरीय शहरों में फूलों की खेती के उत्पादों की बड़ी मांग भारत के लिए अन्य फायदे की बात है। गुलाब, कार्नेशन, गुलदाउदी, जरबेरा, ग्लेडियोलस, ऑर्किड, एन्थ्यूरियम, ट्यूलिप और लिली आदि अंतर्राष्ट्रीय कर्तित फूलों के व्यापार में महत्वपूर्ण फूलों की फसलें हैं।

भारत में, सीएसआईआर फूलों की किस्मों को विकसित करने में सबसे आगे रहा है और ग्लेडियोलस, कार्नेशन, गुलदाउदी, जरबेरा, लिलियम, गैंदा, गुलाब, कैला लिली, राजनीगंधा, स्ट्रेलिट्ज़िया, अलस्ट्रोमेरिया सहित कई फूलों की खेती की कृषि प्रौद्योगिकीयों का एक प्रमुख विकासकर्ता रहा है। सीएसआईआर-हिमालय जैवसम्पदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी) दशकों से फूलों की खेती की नई किस्मों को विकसित करने में अग्रणी हैं। संस्थान ने किसानों के बीच पुष्पीय फसलों को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस मिशन के माध्यम से शहरी और ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए, सीएसआईआर ने निम्नलिखित उद्देश्य के साथ फ्लॉरिकल्चर मिशन शुरू करने का निर्णय लिया, जिसमें विभिन्न कार्यक्षेत्र हैं:

मिशन उद्देश्य

सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके उच्च मूल्य वाले फूलों की खेती के माध्यम से किसानों की आय और उद्यमिता विकास को बढ़ाना।

कार्यक्षेत्र

- गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का उत्पादन
- फूलों की खेती के अंतर्गत क्षेत्रों का विस्तार
- उरबन फ्लॉरिकल्चर
- कटाई के बाद और मूल्य संवर्धन प्रौद्योगिकियों का विकास
- प्रभावी घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार संबंध स्थापित करना
- फूलों की नई किस्मों का विकास व राष्ट्रीय स्तर पर पंजीकरण

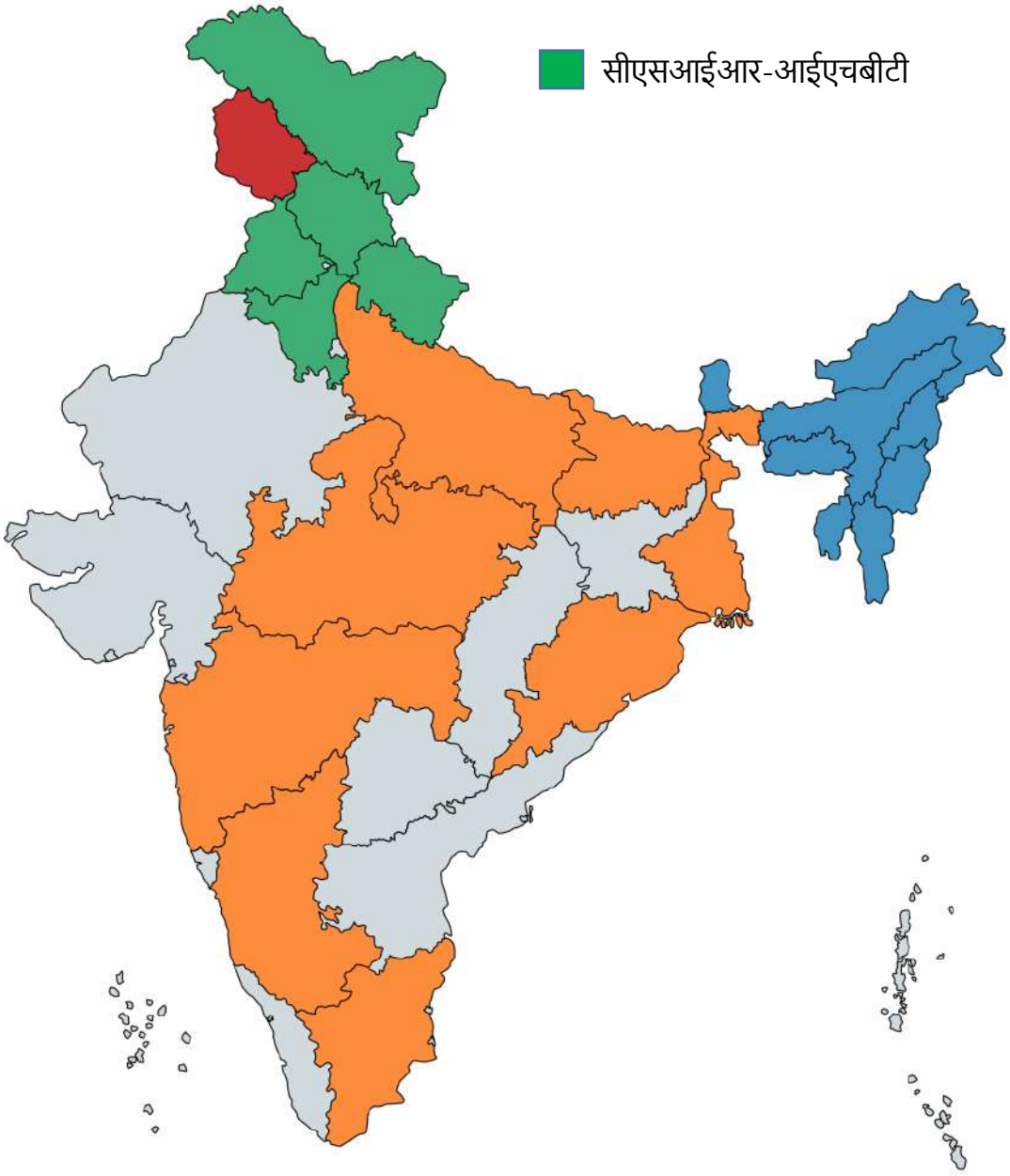

रिगज़ेन छेवांग के प्रयासों ने लेह-लद्दाख में फूलों की खेती को दी एक नई पहचान

रिगज़ेन छेवांग, लेह-लद्दाख के रहने वाले हैं और हॉर्टिकल्चर में पीएचडी कर चुके हैं। वर्ष 2021 में, उन्होंने लिलीयम की खेती शुरू की थी। पहले, लद्दाख में व्यावसायिक फूलों की खेती नहीं होती थी सभी लोग पारंपरिक फसले ही लगते थे, लेकिन उनके साहस ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया। सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन की मदद से उन्होने पहले अपनी ज़मीन पर वर्ष 2021 में परीक्षण के तौर पर लिलीयम के बल्ब लगाए जो की सफल रहे उसके बाद, वर्ष 2022 में जब परीक्षण अच्छे स्तर पर सफल रहे तो उन्होने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होने लिलीयम की खेती को 1 कनाल से 4 कनाल पर विस्तार किया और अब लेह-लद्दाख में उनका जाना माना नाम है।

उनका कहना है कि शुरुआती दिनों में, व्यावसायिकता और मार्केटिंग के लिए उन्होने लगभग मुफ्त में फूल बांटे, जैसे कि वहाँ के होटलों और सरकारी दफ्तरों में, ताकि लोग जानें कि यहाँ भी फ्रेश फूल उपलब्ध हैं। उन्होंने समाचार पत्रों में विज्ञापन दिये ताकि सबको जानकारी मिले। पहले साल में उन्होंने जमीनी स्तर पर फूलों की खेती के विभीन्न कार्यक्षेत्रों का सर्वेक्षण किया। दूसरे साल से फूलों की मांग आनी शुरू हुई, और फूलों की अपार माँग को देखकर, उन्होंने सोचा कि हमें बड़े स्तर पर लेह मार्केट मे स्थापित होना चाहिए ताकि लोगो की पहुँच फूलों के लिए आसान हो जाए। इसलिए, वर्ष 2022 में ही उन्होंने एक फ्लॉवर शॉप खोली, जिसका नाम उन्होंने '*सरचेन फ्लॉवर शॉप*' रखा। लद्दाख एक पर्यटन स्थल होने के कारण, वहाँ समय-समय पर कई पारंपरिक त्योहार होते हैं जिसमें फूलों के गुलदस्तों की, सजावट के लिए ताज़े फूलों की आवश्यकता होती है।

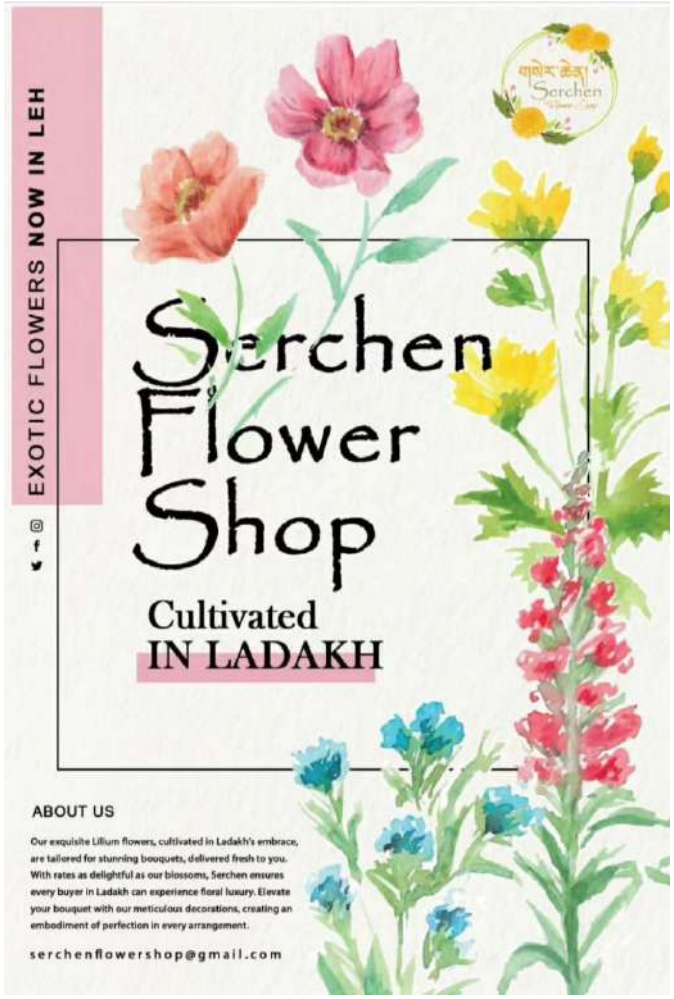

साथ ही होटलो में भी सजावट के लिए उनके पास आए दिन ताजे फूलों की माँग रहती है। यही नहीं लिलीयम की खेती के चलते उन्होने एक रजिस्टर्ड ग्रुप भी बनाया है जिसका नाम 'लद्दाख प्रोग्रेसिव फ्लावर कॉपरेटिव्स' है, जिसमें ज्यादातर महिलाएँ शामिल हैं जो की महिला सशक्तिकरण का अच्छा उद्धहरण है। आज उनके साथ 100 से अधिक महिलाएँ जुड़ी हैं। सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत ,वर्ष 2022 अगस्त मे, कॉपरेटिव्स विभाग द्वारा प्रायोजित, लेह से लगभग सोलह महिला व पुरुष किसानों का लाहौल व आई एच बी टी ,संस्थान मे कंदिए पुष्पों की कृषि प्रौधौगिकी पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया था, जीसका उनको काफी लाभ मिला। तथा उच्च गुणवक्ता की लिलीयम स्पाइक्स को लेह से दिल्ली बाज़ार मे तत्कालीन कृषि सचिव की मदद से हवाई जहाज द्वारा भेजा गया। यह पहला ऐसा मौका था जब लेह से पहली बार फूलों का विस्तारण दिल्ली बाज़ार मे हुआ ।

रिगज़ेन छेवांग का संदेश

व्यापारिक दृष्टिकोण से फूलों की खेती के लिए उत्तम बाजार, जानकारी का होना और समय प्रबंधन की आवश्यकता होती ही है। । सर्दियों में, हमें चुनौती का सामना करना पड़ता है क्योंकि बाहर फूल उगाना संभव नहीं होता है, इसलिए हमने सभी फूल जैसे ट्यूलिप, लिलीयम, ग्लैडियोलस, ग्रीनहाउस में लगाना शुरू किया।

यहाँ परिवहन लागत अधिक होती है क्योंकि हमें दिल्ली तक फूल भेजने के लिए हवाईअड्डे का सहारा लेना पड़ता है चुकीं सड़क मार्ग से ले जाने मे ज़्यादा समय लगता है। फ्लॉरिकल्चर मिशन के सहयोग से, हमें आईएचबीटी के साथ जुड़ने का मौका मिला और यहाँ के वैज्ञानिक डॉ. भार्गव, तकनीकी सहायक विकास जी ने समय समय पर हमें काफी समर्थन प्रदान किया, जिसके कारण हमारा सपना सफल हुआ।

फूलों की खेती: किसानों की आय का नया स्रोत, गुरविंदर सिंह सोही जी की कहानी

गुरविंदर सिंह सोही, जो पंजाब के फतेहगढ़ साहिब के निवासी हैं, एक सफल किसान और फूलों के प्रति प्रेम रखने वाले है। गुरविंदर जी वर्ष 2008 से फूलों की खेती में संलग्न हैं और उन्होंने अपने क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इसके साथ ही, रोजगार के अवसरों को भी आकर्षित किया है। उनकी रजिस्टर्ड "फ्रेंड्स फ्लावर सोसाइटी" भी है जो उनके क्षेत्र के अन्य किसानों के साथ मिलकर चलाते है।

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में उन्हे डॉ. भार्गव से पता चला। उन्होंने इस मिशन के बारे में मुझे पूरी जानकारी दी, जिसमें उन्होंने बताया कि किसानों को फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत सब्सिडी पर फूलों के पौधे मिलते हैं, साथ ही समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता हैं। संस्थान से हमे गेंदे की पौध, ग्लैडीओलस के कंद, कार्नेशन व गुलदाउदी के पौधे मिले थे। जिनसे हमे अच्छा लाभ हुआ।

हमारे साथ गाँव के और भी किसान जुड़े हुए हैं और हम ज्यादातर फूलों की खेती सर्दियों में करते हैं। सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन ने फूलों की फसलों के साथ-साथ कोल्ड स्टोरेज का भी प्रावधान दिया है, जिससे हम सही समय पर कटाई कर सकते हैं और कोल्ड स्टोरेज की वजह से अगर हम फूलों को समय पर ना बेच पाएं तो हम उन्हें कोल्ड स्टोरेज में रख देते हैं, जिससे हमारे फूल अब खराब नहीं होते तथा बाज़ार मंदी से भी बचा जा सकता है।

गुरविंदर जी बताते हैं कि एक एकड़ में ग्लेडियोलस से एक सीजन में 2 से 2.5 लाख रुपये तक की कमाई हो सकती है। वहीं एक एकड़ से गेंदें की खेती से 1.5 लाख तक की कमाई आराम से हो जाती है और जहां धान की फसल से कमाई साल में केवल एक बार होती है वही फूलों की खेती से हर महीने कमाई होती है तथा धान व गेहू की तुलना मे तीन से चार गुना आर्थिक फ़ायदा होता है। उनकी 22 एकड़ में फूलों की खेती का अनुभव उन्हें सिखाता है कि किसान की मेहनत और उनकी समर्पणशीलता से कितना अधिक उत्पादन किया जा सकता है। गुरविंदर जी फूलों के बीजोत् पादन पर भी काम करते है।

गुरविंदर का कहना है कि सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत सब्सिडी पर फूलों के पौधे मिलते हैं, जो न केवल उनकी खेती को सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें एक नई दिशा भी प्रदान करता है। जब भी उनकी फूलों की फसल में कोई भी परेशानी होती है, तो आईएचबीटी के वैज्ञानिकों और उनकी टीम उनका साथ देती है और उन्हें नए तरीकों के बारे में सिखाती है, जैसे कि बीमारी से कैसे फ़सल को बचाया जा सकता है या उचित खाद डालने का तरीका, नई तकनीकों से पौधो का पालन आदि।

गुरविंदर ने कहा कि फूलों की खेती से उन्हें अब अधिक फायदा मिलने लगा है। इससे उनकी कमाई और खेती की सुरक्षा में सुधार हुआ है। गुरविंदर जी हर साल 15-20 लाख तक आराम से कमा लेते हैं, जो दूसरे किसानों के लिए भी प्रेरणास्रोत है।

गुरविंदर की कहानी हमें यह सिखाती है कि किसान अपनी मेहनत, समर्पणशीलता और नई तकनीकों के साथ अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं। उनका उत्साह और प्रेरणादायक कहानी हमें सिखाती है कि फूलों की खेती केवल एक खेती नहीं, बल्कि एक सपनों का सफर है, जो समृद्धि और समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

खेतों से फूलों की ओर :मोहम्मद अब्बास का करगिल से दिल्ली तक का सफर

लद्दाख के करगिल जिले के निवासी मोहम्मद अब्बास की कहानी एक प्रेरणादायक उदाहरण है। उन्होंने अपनी शिक्षा एम.एस. फ्लॉरिकल्चर व लैंडस्केपिंग में की है। उनके गाँव में पहले से ही गेहूं, बाजरा, और मक्के की खेती होती थी। लेकिन उन्होंने कुछ नया करने का सोचा व अपनी फ्लोरिकल्चर में की हुई शिक्षा को धरातल पर लाने का काम किया तथा फूलों की खेती करने का फैसला किया। कुछ अनुसंधान करने पर उन्हे सीएसआईआ-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। जिसके चलते वे सीएसआईआर-आईएचबीटी के संपर्क में आए और अब वह लिलियम, ट्यूलिप और ग्लैड की खेती करते है। आईएचबीटी ने न केवल उन्हे फूलों की खेती पर प्रशिक्षण दिया साथ ही तकनीकी सहायता भी प्रदान की है। फ्लॉरिकल्चर मिशन के चलते उन्हे फूलों के पौधे और बल्ब भी मिले है।

उनका कहना है वर्ष 2021 में, हमने अपने गाँव में सीएसआईआर-फ्लोरिकल्चर मिशन के चलते एक किसान सोसाइटी की स्थापना की, जिसमें शुरू में 15 से 20 किसान शामिल थे, और आज 100 से अधिक किसान फूलों की खेती से लाभान्वित हो रहे हैं। फ्लॉरिकल्चर मिशन ने न केवल करगिल के किसानों को एक नई राह दिखाई है बल्कि उनकी आर्थिक स्थिति को भी मजबूत किया है।

मोहम्मद अब्बास जी 4-5 कनाल पर सिर्फ फूलों की खेती करते है। उनका कहना है, हमें फूलों की खेती से काफी फायदा हो रहा है। हम लिलियम के गुणवत्ता वाले कर्तित पुष्प डंडियाँ (स्पाइक्स)उगाते है, जिनका हमें काफी अच्छा दाम मिल जाता है और उन्हे फिर हम स्थानीय मार्केट के साथ दिल्ली और बंगलोर के बाजारों में पहुंचाते है। इस के साथ हम लिलियम के बल्ब का भी उत्पादन करते है जिससे किसानों को दोगुना लाभ होता है।

मोहम्मद अब्बास जी:

मैं उन सभी किसानों को यह संदेश देना चाहता हूँ जो फूलों की खेती से जुड़ना चाहते है कि फ्लॉरिकल्चर में खेती करने से किसान आर्थिक तौर पर मजबूत होता है। इसमें मेहनत कम लगती है और मुनाफा भी ज्यादा होता है।

मैं सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव, वैज्ञानिक डॉ. भव्य भार्गव और विकास सोनी जी का आभारी हूं कि उन्होंने हमें इस मिशन के बारे में जागरूक किया और हमारे किसानों को समय-समय पर तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया है, जिससे करगिल के किसान खुश हैं और फूलों की खेती मे कड़ी मेंहनत कर रहे हैं।

लाहौल के किसान का पारंपरिक फसलों से फूलों को खेती का सफर

लाल सिंह, 63 वर्षीय किसान है जिनका बचपन से ही खेती से जुड़ाव रहा हैं। उन्होंने अपना पूरा जीवन ही खेती को समर्पित कर दिया है। उनकी खेती लाहौल में ज्यादा तर प्राकृतिक और स्थानीय संसाधनों पर आधारित रहती है।

पहले, लाल सिंह जी अपने खेतों में सिर्फ पारंपरिक फसलें ही उगाते थे जिससे उनका गुजारा ही हो पाता था, लेकिन, वर्ष 2008 में उन्होंने सीएसआईआर- आईएचबीटी के साथ मिलकर, लिलियम पर परिक्षण प्रयोग शुरू किया, जो की सफल रहा। लाल सिंहजी के खेती मे फ्लॉरिकल्चर मिशन का भी बड़ा योगदान रहा है, वे समय-समय पर संस्थान से फूलों की खेती की जानकारी लेते रहते है।

इस प्रयोग के परिणामस्वरूप, लाहौल के लोगों को फ्लॉरिकल्चर के बारे में जागरूकता हुई और उन्होंने फूलों की खेती करने का निर्णय लिया। आज, वह अपने खेतों में ओरिएंटल व एशियाई लिली की खेती करते हैं। इसी के साथ उन्होंने शतावरी, ब्रोकोली, लीक, चीनी गोभी, स्नो मटर और अजमोद जैसी विदेशी सब्जियाँ भी लगानी शुरू की। उनके फूलों का बाजार दिल्ली, आज़ादपुर, गाज़ीपुर जैसे बड़े बाजारों में शामिल है, जहां उनके फूलों को अच्छे दाम मिल जाते है।

इस प्रयास से उनके खेती की परिभाषा बदल गई है और वह अब न केवल स्थानीय समुदाय के लिए एक आत्मनिर्भरता का स्रोत हैं, बल्कि उनका यह कदम लाहौल के कृषि क्षेत्र में भी एक नया दृष्टिकोण प्रदान कर रहा है। लाल सिंह जी का यह संघर्ष और समर्पण एक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किसान कैसे फ्लॉरिकल्चर मिशन के साथ जुड़कर व कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ सकता है, जीससे आर्थिक मजबूती पर जोर दिया जा सकता है । साथ ही, लाल सिंह जी एम. एस.एम. ई(सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय) क्लस्टर प्रोग्राम से भी जुड़े है, जिसके तहत उनके क्लस्टर को कोल्ड स्टोरेज सुविधा मिली है अतः उनको बाज़ार मे मंदी से बचने व अच्छे दामों पर अपनी फसलों को बेचने का मौका मिलता है।

फूलों की खेती: एक महिला किसान की कहानी

मेंरा नाम यांगछेन डोलमा है और मैं लद्दाख, ज़ंस्कार गाँव की निवासी हूँ। मेंरी आयु 58 वर्ष है और मैंने अपनी शिक्षा दसवीं कक्षा तक की है। इसके बाद, घर में कोई आय का साधन न होने के कारण खेती का काम शुरू किया।

पहले, मेंने मौसमी सब्जियों की खेती से शुरुआत की और बाद में फूलों की खेती करना शुरू किया। फूलों की खेती के बारे में मुझे अपने गाँव के किसानों से पता चला, जिस के चलते हमें सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुडने का मौका मिला। आज हमें सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन और सीएसआईआर-आईएचबीटी से जुड़े 3 साल हो गए है, जीससे हमें समय-समय पर तकनीकी सहायता व प्रशिक्षण मिलता आया है। जिससे मुझे अपनी खेती में लिलियम, गेंदा और ग्लैडियोलस को उगाने में बहुत सहायता मिली है।

मेंरी खेती में प्रमुख फसल लिलियम है, जिसे हमने बड़े पैमाने पर उगाना शुरू किया है। मैने देखा फूलों की खेती में कम मेंहनत होती है जबकि सब्जियों में ज्यादा मेंहनत होती है। एक बार गुड़ाई और खाद डालने के बाद, फूलों में अधिक काम नहीं होता है। फूलों की खेती से हम आत्मनिर्भर हो गए हैं और हमारे घर की हालात में भी सुधार आया है।

मेंरे लिलियम के एक कट स्पाइक का मूल्य लेह के मार्केट में 30 रुपये में बिकता है, जबकि दिल्ली के मुख्य मार्केट में यह 40 से 50 रुपये है। हमारे फूल अधिकतर दिल्ली के बाज़ार में बिकते हैं और बचा हुआ फूल हमारे विक्रेता रिगज़ेन छेवांग जी को बेच देते हैं, वह होटल मे सजावट और गुलदस्ते आदि के लिए उपयोग करते हैं। पहले हम 1 कनाल में फूलों को लगाते थे, लेकिन अब हमने क्षेत्र को बढ़ाकर 3-4 कनाल में लगा दिया है। जिससे हमें अच्छा फायदा हो रहा है।

मेंरा संदेश आज की युवा पीढ़ी के लिए है कि सरकारी नौकरी के पीछे मत भागो, अगर आपके पास ज़मीन है तो उसका उपयोग करो। खेती करो, मेंहनत करो और अपने पैरों पर खड़े हों।

यांगछेन डोलमा जी महिला सशक्तिकरण का एक शानदार उदाहरण हैं। उन्होंने मुश्किल समय में अपने परिवार का साथ दिया और अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारा। उनकी मेंहनत और साहस से, वे न केवल अपने परिवार को संभाल रही है, बल्कि अपने सपनों को भी पूरा कर रही है जिसका श्रेय वह सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन को देती है।

सुनील चंदेल: हिमाचल के एक उन्नतिशील किसान की उच्च स्तरीय फूलों की खेती

श्री सुनील चंदेल; हिमाचल प्रदेश, बिलासपुर के ग्राम औहर के निवासी, एक उन्नतिशील किसान के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वर्ष 1999 से वह फूलों की खेती कर रहे हैं, वर्ष 2000 मे उन्होंने अपने 1000 वर्ग मीटर क्षेत्र पर पहला पॉलीहाउस स्थापित किया, जिसमे वह आजतक सिर्फ फूलों की खेती करते आ रहे रहे है।

2014 में पहली बार सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर से उनका संबंध जुड़ा, जहाँ से उन्होंने सीएसआईआर-आईएचबीटी की तकनीक और सलाह से लाभ लिया व अपनी फूलों की खेती और अच्छे स्तर पर करना शुरू किया।

आज भी, सुनील चंदेल फूलों की खेती में निरंतर लगे हैं खासकर सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुड़ने के बाद, श्री चंदेलजी ने सीएसआईआर-आईएचबीटी से कई कर्तित फूलों पर प्रशिक्षण लिया है व कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया है, उनकी फसल में कार्नेशन, गुलाब, ग्लेडियोलस, जरबेरा और जिप्सोफिला शामिल हैं। सुनील जी बताते है, सीएसआईआर-आईएचबीटी से हमे समय-समय पर सहायता मिलती रहती है। फूलों की खेती से संबंधित कोई भी परेशानी या फसलों की बीमारी हो तो हम उससे संबंधित मोबाईल कॉल करके पूछते रहते हैं। मै लगभग 25 सालों से फूलों की खेती करता आ रहा हूँ पहले हम खुले में फसल उगाते थे,बाद में हमने धीरे-धीरे पॉलीहाउस में फसल उगाना शुरू किया। मैं तो शुरू से ही फूलों की खेती करता था, लेकिन मेरी पत्नी पहले एजुकेशन बोर्ड में जॉब करती थी। जब हमारी फूलों की खेती अच्छे चलने लगी, तो मेरी पत्नी ने भी अपनी नौकरी छोड़ दी।

मैं अभी भी एग्रिकल्चर यूनिवर्सिटी में फ्लावर एम्बेसडर हूँ, और हम जहाँ भी जाते हैं, फूलों के बारे में बताते हैं और सलाह भी देते है कि कृत्रिम फूलों की जगह प्राकृतिक फ्रेश फूलों का प्रयोग किया जाए। पिछले साल हमें 24 लाख तक की कमाई हुई थी। बाकी, बाजार पर निर्भर करता है। मुझे लगता है गेहूं, कनक में इतना टर्नओवर नहीं होता है जितना फूलों की खेती से होता है।

यही ही नहीं, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने उन्हें फ्लॉरिकल्चर मिशन के चरण । और ॥ के दौरान कार्नेशन, गुलाब, ग्लेडियोलस , जरबेरा और जिप्सोफिला की उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री भी 90 % सब्सिडी पर प्रदान की है। अप्रैल 2022 से मार्च 2023 के बीच, सुनील चंदेल ने दिल्ली, उदयपुर (राजस्थान), चंडीगढ़, और लुधियाना (पंजाब) के बाजारों में बेचे गए कटे हुए फूलों से 60 लाख रुपये कमाए हैं। साथ ही, उन्होंने साल भर में 5 मजदूरों को रोजगार भी प्रदान किया है, जिससे 1500 मानव दिनों के बराबर हैं।

सुनील चंदेल की कड़ी मेहनत और सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा संचालित सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन की मदद से उन्होंने फूलों की खेती में ऊँचाइयाँ प्राप्त करने में सफलता ली है। उनकी किसानी ने न केवल उनके जीवन को बदला है, बल्कि उनके समुदाय में आर्थिक विकास और रोजगार को भी बढ़ावा देने में भी योगदान किया है। चंदेल जी की यात्रा यह दिखाती है कि वैज्ञानिक हस्तक्षेपों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सही उपयोग करने से किसानों के जीवनस्तर में सुधार किया जा सकता है और कृषि विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

सफलता की खेती: फ्लॉरिकल्चर में एक यात्रा

उत्तराखंड के हरित परिदृश्यों में, गुरविंदर सिंह कंबोज की मेहनत और कृषि को प्रकाशित किया जा रहा है। उनकी फ्लॉरिकल्चर में रुचि की यात्रा वर्ष 2012-13 में शुरू हुई, जब उन्होंने पाँच एकड़ के भूमि पर विभिन्न प्रकार के फूल उत्पन्न करने का काम आरंभ किया। चानकपुर के इस सुंदर क्षेत्र से संबंधित, गुरविंदर सिंह कंबोज की फ्लॉरिकल्चर में परिश्रम से न केवल उन्हें व्यक्तिगत सफलता मिली है, बल्कि स्थानीय कृषि समुदाय को भी समृद्धि मिली है।

किसान समाज प्रमुख के रूप में, गुरविंदर उपाध्यक्ष के पद पर है। जो अन्य किसानों को प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान करते हैं और खेती के नवाचार प्रयोगों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी वितरित करते हैं। प्रारंभ में पाँच सदस्यों से बनी यह समिति अब 35 व्यक्तियों को शामिल करती है, जो सभी फ्लॉरिकल्चर के प्रति अपने उत्साह से एकजुट हैं।

गुरविंदर द्वारा उत्पन्न किए गए फूलों की विविधता में जरबेरा, गुलाब, ग्लैडियोलस, जिप्सो, लिमोनियम, लिली और ट्यूबरोज़ शामिल हैं। इनमें से जरबेरा उनकी सबसे सफल फसल है। जबकि उत्पाद का अधिकांश स्थानीय बाजारों में बिकता है, अधिशेष उत्पाद दिल्ली की ओर जाता है। परिवहन के दौरान फूलों की ताजगी को सुनिश्चित करने के लिए गुरविंदर को कोल्ड वैनों का उपयोग करना पड़ता है या रेल सेवाओं पर निर्भर रहना पड़ता है।

उनका संबंध सीएसआईआर-आईएचबीटी के साथ, अच्छी गुणवत्ता के पौधों को प्राप्त करने प्रशिक्षण और कीटों या बीमारियों के प्रबंधन के लिए विशेषज्ञ सलाह के लिए मददगार रहा है। गुरविंदर के निरंतर समर्थन को लेकर उन्हें सीएसआईआर-आईएचबीटी के द्वारा आयोजित फ्लॉरिकल्चर मिशन का परिचय रोपड़ में मिला।

लॉकडाउन के दौरान अड़चनों का सामना करने के बावजूद, गुरविंदर को सीएसआईआर-आईएचबीटी से सहायता मिली, जो नुकसान को कम करने में सहायक हुआ।

फ्लॉरिकल्चर के अलावा, गुरविंदर गन्ना और गेहूं जैसी कृषि फसलों की खेती में भी लगे हैं। हालांकि, उनका प्राथमिक ध्यान वाणिज्यिक फूल की खेती पर है।

एक वर्ष के अंदर, गुरविंदर की पाँच एकड़ की व्यवसायिक पहली से प्राप्त आमदनी 10 से 15 लाख रुपये के बीच होती है, जो खेती के क्षेत्र में ध्यान और विशेषज्ञता को आकर्षित करती है।

गुरविंदर सिंह कंबोज की कहानी में जीने की शक्ति को दिखाती है, जो न केवल एक साधारण खेत को एक सफल उद्यम में बदल देती है, बल्कि वर्तमान के किसानों को नवाचार और प्रतिकूलताओं को निर्धारित करने के लिए प्रेरित करती है। उनके अनुभव से, वह न केवल परंपरागत कृषि के सीमाओं को परिभाषित करते हैं, बल्कि नई किसानों की पीढ़ी को आधुनिकीकरण और सहनशीलता को ग्रहण करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

_गुरविंदर_ जी का संदेश;

गुरविंदर की सलाह उन उत्साही किसानों के लिए महत्वपूर्ण है जो अनुभव के ज्ञान के माध्यम से प्राप्त हुई है। उन्होंने फ्लॉरिकल्चर के लिए निरंतर प्रतिबद्धता के महत्व को जोर दिया है।

गुरविंदर को प्रशिक्षण लेने और बाजार के गतिविधियों को अधिक से अधिक जानने की महत्वता को जटिलताओं के साथ निभाने की सलाह देते हैं, जिससे नियमित प्रयासों से महत्वपूर्ण लाभ होता है।

रणबीर सिंह हिमाचल के खेतिहर: फ्लॉरिकल्चर में बनाई अद्वितीय पहचान

रणबीर सिंह हिमाचल प्रदेश के गाँव जागला लाहौल स्पीति क्षेत्र के एक किसान है, जिन्होंने कृषि के क्षेत्र में अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने हेतु हुए नई दिशा में कदम बढ़ाया है। रणबीर सिंहजी , जो पारंपरिक खेती से जुड़े हुए हैं, उन्होंने आलू-मटर के साथ फूलो की खेती मे अपनी जड़े जमाई है।

वर्ष 2008 में उन्होंने अपने कृषि क्षेत्र में नई राह चुनी, जब उन्होंने फूलो की खेती शुरु की। इस अनूठे प्रयास से उन्होंने गाँव और किसानों के बीच एक नये संबंध का संचार किया है।

रणबीर जी का कहना है, "मेरे लिए खेती सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है। जब मैंने फ्लॉरिकल्चर में अपना पहला कदम रखा, तो यह मेरे लिए एक नए सफर का आरंभ था।मुझे इस से एक नया मार्गदर्शन मिला है सीएसआईआर आई एच बी टी से मै समय-समय पर फूलों की खेती पर- प्रशिक्षण लेता रहता हूँ।

उनके खेतों में अब न सिर्फ आलू--मटर शामिल है, बल्कि लिलीयम फूलों की खुशबू भी महक रही है। इसके अलावा, रणबीरजी ने अपने खेतों में नए तकनीकों का भी प्रयोग किया है, जिससे उनकी उपज में वृद्धि हुई है। फ्लॉरिकल्चर ने उनकी आय 30-40% सालाना बढ़ा दी है जो की उनके जीवन मे एक मील का पत्थर साबित हुई है। साथ ही वे कंदीय पुष्पों के पौध उत्पादन पर भी कार्य करते है।

गाँव के लोगों का कहना है कि रणबीर सिंह की उम्र के अनुसार उनकी दृढ़ता और समर्पण को देखकर, बच्चों में भी कृषि के प्रति रुचि बढ़ रही है।

रणबीर सिंह की यह कहानी हमें यह सिखाती है कि मेहनत, समर्पण और नए विचार के साथ, कोई भी क्षेत्र सफलता की ऊँचाइयों को छू सकता है। वे न केवल अपने गाँव के लिए बल्कि पूरे प्रदेश के लिए एक प्रेरणास्रोत बन चुके हैं।

एक खिलती हुई उम्मीद: ओम प्रकाश की फ्लोरीकल्चर में यात्रा

सोलन के एक निवासी ओम प्रकाश, गाँव बड़ोग के रहने वाले है। इनकी उम्र 50 साल है और इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री की है। ओम जी पिछले 15-20 वर्षों से फूलों की खेती करते आ रहे है, उनका यह अनुभव उन्हें एक माहिर किसान बना चुका है। हालांकि, एक साल पहले ही उन्होंने पॉलीहाउस खेती में कदम रखा है, जिससे उनकी कृषि विधियों मे और सुधार आया है। उनकी इस उद्यमिता और परिश्रम का परिणाम यह है कि वे अब फ्लोरीकल्चर क्षेत्र में प्रेरणादायक मार्ग राह पर चल रहे हैं, जो न केवल उन्हें स्वावलंबी बनाती है, बल्कि उनके समाज समुदाय के लिए भी एक आदर्श उदाहरण है।

वह बताते है उनके पास दो पॉलीहाउस है, एक मे वे गुलाब की संरक्षित खेती व दूसरे मे कार्नेशन की संरक्षित खेती करते है, जिनका क्षेत्रफल 2000 वर्ग मीटर है। ओम जी ने अपने कार्नेशन के पॉलीहाउस में तापमान को नियंत्रित करने के लिए एक पानी कूलर भी लगाया है, जिससे उन्हे उत्तम उत्पादन मिलता है। तापमान के नियंत्रण के अलावा, ओम जी ने ड्रिप इरिगेशन प्रणाली भी लगाई है, जिससे फूलों को पानी और पोषक तत्व प्रदान करने में कुशलतापूर्वक मदद मिलती है।

ओम जी को सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत सीएसआईआर-आईएचबीटी से कार्नेशन के पौधों पर सब्सिडी व प्रशिक्षण भी लिया है। यह उनके लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हुआ, क्योंकि इससे उन्हें पौधों की खरीददारी और संभालने के लिए उचित आर्थिक सहायता मिली। इस सब्सिडी के परिणामस्वरूप, ओम जी ने अपनी खेती के अनुप्रयोगों में नवाचार और उन्नति लाई। वे अब उच्च गुणवत्ता वाले कार्नेशन पौधों का उत्पादन कर रहे हैं, जो न केवल उन्हें अधिक मुनाफा दिला रहे हैं, बल्कि स्वयं की कृषि प्रणाली को भी सशक्त बना रहे हैं।

ओम प्रकाश की कहानी एक प्रेरणादायक संघर्ष का उदाहरण है, उन्होने अपने क्षेत्र के अनुकूल और सुधारित तकनीकों का उपयोग करके कृषि क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है।

ओम प्रकाश का संदेश

फ्लॉरिकल्चर उत्पादन मे फ़ायदा जरूर है, लेकिन इसमें सबसे बड़ी चुनौती बाजार की है। फूलों का मुख्य बाजार दिल्ली और चंडीगढ़ में है, इसलिए फूलों की खेती करने वालों को अपने आस -पास के बाजार का पता होना बहुत आवश्यक है।

फूलों की खेती: अनुभव और सफलता की कहानी

मेरा नाम करणवीर सिंह संधु है, और मैं जालंधर, पंजाब का निवासी हूं। मेरी उम्र 34 वर्ष है, और मैंने एम.टेक इलेक्ट्रिकल और एम.बी.ए की उच्च शिक्षा प्राप्त की है। मेरे पिता किसान हैं, और नियमित रूप से कृषि संबंधित चर्चा घर मे होने से मुझे बचपन से ही प्राकृतिक संवेदनशीलता और कृषि के प्रति रुचि थी।

अपनी उच्च शिक्षा के बाद, मैंने कृषि उद्योग में अपनी आजीविका बनाने का निर्णय किया। फूलों की खेती मेरे लिए एक सही निर्णय था। मैंने अपने क्षेत्र में गुलदाउदी, ग्लैड और रजनीगंधा जैसे विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती की। फूलों की खेती में पहली बार कदम रखते समय अनुभवी किसानों से मैने बहुत कुछ सीखा। मेरे पास विज्ञान की शिक्षा और प्रबंधन का ज्ञान था, जिसने मुझे कृषि उत्पादन को बेहतर बनाने में मदद की।

मुझे फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में गुरविंद्र सिंह सोही जी से पता चला। इस मिशन के तहत हमें फूलों की खेती के बारे मे प्रशिक्षण लेने का मौका मिला है, जिससे हमें काफी लाभ मिला है।अब, मेरा फूलों का मुख्य बाजार चंडीगढ़ में है, जहाँ हमें अच्छी कीमत मिलती है। मिशन के तहत हमें काफी बचत हो रही है और हमारे पौधों की गुणवत्ता भी उत्कृष्ट है। अभी तक हमने सभी फूलों को खुले मे 7-8 एकड़ में लगाए हैं, लेकिन मैं आगे ग्रीनहाउस में लगाने की योजना बना रहा हूं। इससे फूलों की खेती में और भी उत्तम लाभ हो सकेगा।

मुझे खुशी है कि मैंने अपने कृषि उद्योग में फूलों की खेती का समर्थन किया और इससे मेरा सपना साकार हो रहा है। फूलों की खेती मेरे लिए न केवल एक व्यवसाय है, बल्कि यह मेरे और मेरे परिवार के लिए एक संतोषप्रद और समृद्ध जीवन का साधन है।

करणवीर सिंह जी का संदेश:

फूलों की खेती मेरे लिए न केवल एक व्यवसायिक अवसर है, बल्कि यह मेरे लिए एक प्रेरणादायक अनुभव भी है। मैं अन्य लोगों को भी इस उद्यम में शामिल होने के लिए प्रेरित करूंगा। फूलों की खेती से न केवल हमें आर्थिक लाभ होता है, बल्कि यह प्रकृति से जुड़ाव और आत्मनिर्भरता का साधन भी है।

शुभम शर्मा: कार्नेशन खेती में सफलता की कहानी

सोलन के निवासी, शुभम शर्मा, फ्लॉरिकल्चर क्षेत्र में अपने सफलतापूर्ण मार्ग पर अग्रसर हैं। उन्होंने कार्नेशन की खेती में अपनी मेहनत और लगन के साथ खुद को एक प्रमुख उदाहरण के रूप में साबित किया है।

शुभम की कार्नेशन खेती की यात्रा उसकी कृषि विधियों को विविधता देने की एक सोच से शुरू हुई। कार्नेशन के अलावा, उन्होंने ग्लेडियोलस और लीलियम जैसे फूलों की खेती भी की, जो एक सामर्थ्यवान किसान के रूप में उनकी विविधता को दर्शाती है। अपनी नर्सरी की स्थापना करके, शुभम ने फ्लॉरिकल्चर में एक नया मार्ग बनाया जिससे उच्च गुणवत्तापूर्ण पौधों की एक स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

शुभम बताते है, सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी प्राप्त करते ही, उन्होंने सीएसआईआर-आईएचबीटी मे मिशन के नोडल वैज्ञानिक डॉ. भार्गव से संपर्क किया। डॉ. भार्गव ने उन्हें मिशन से होने वाले फ़ायदों से अवगत कराया, जिसमें फ्लॉरिकल्चर के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण भी दिया गया। इस समर्थन से शुभमजी को काफी लाभ हुआ है, जिससे उन्होने वार्षिक लाभ 8 से 10 लाख रुपये तक लिया।

शुभम का प्राथमिक विक्रय केंद्र गाजियाबाद में है, वह दिल्ली को फ़्लावर ट्रेड का केंद्र मानते हैं। हाल ही मे बाजार के रुझान दिखाते हैं कि जनवरी में कार्नेशन के एक बंच का 300 से 350 रुपये तक मिलता है जो की किसी भी किसान के लिए फायदे का सौदा होगा। उनका कहना है, इसके अलावा, सोलन की जलवायु शीतकालीन खेती के लिए उपयुक्त होने से इसेअधिक उत्पादक बनाती हैं।

शुभम शर्मा की सफलता की कहानी,उन सभी किसानो के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, जो फ्लॉरिकल्चर के जीवंत संसार में सामर्थ्य और संरचना की खोज में हैं। उनकी सक्रिय दृष्टि, कृषि विधियों और बाजार की विवेकपूर्ण समझ ने उन्हे फ्लॉरिकल्चर के क्षेत्र में दृढ़ समृद्धि की ओर अग्रसर किया है।

शुभम का संदेश

फ्लॉरिकल्चर में प्रवेश करने से पहले फसलों के बारे में विस्तृत जानकारी होना अत्यंत आवश्यक हैं। इसके अलावा, बाजार की गतिविधियों को समझना भी महत्वपूर्ण है।

लाहौल के प्रेम लाल के संघर्ष की कहानी

लाहौल के प्रेम लाल, जिन्होंने अपने गाँव को फूलों की खेती में एक नया आयाम दिया है । एक पूर्वी किसान, जो पहले पारंपरिक फसलों की खेती करते थे, वह अब फूलों के सजीव रंगों की खेती का आनंद ले रहे है।

सीएसआईआर के उत्कृष्ट प्रशिक्षणों ने उन्हें फूलों की खेती के बारे में जानकारी प्रदान की, जिससे उन्होंने अपने कृषि क्षेत्र को नई ऊर्जा दी। अब वह 1.5-2 बिघा में फूलों की खेती करते हैं और इन्हें दिल्ली के बाजार में बेचने से लाभ उठा रहे हैं। प्रेम लाल कंदीय फूलों के बीजोत्पादान पर भी काम करते है।

प्रेम लाल उन किसान भाइयों को सलाह देते हैं जो अब भी लाहौल मे आलू और मटर की खेती में व्यस्त हैं, कि वे लिलियम, ट्यूलिप व अन्य कंदीय फूलों के साथ एक नया क्षेत्र अन्वेषित करें। उनका अनुभव दिखाता है कि फूलों की खेती, सब्जियों की खेती की तुलना मे अधिक फायदेमंद होता है। इस प्रकार, प्रेम लाल का उत्थान एक प्रेरणादायक कथा है, जो किसानों को एक नया दृष्टिकोण देता है और कृषि के क्षेत्र में नई संभावनाओं का खुला मार्ग दिखाता है।

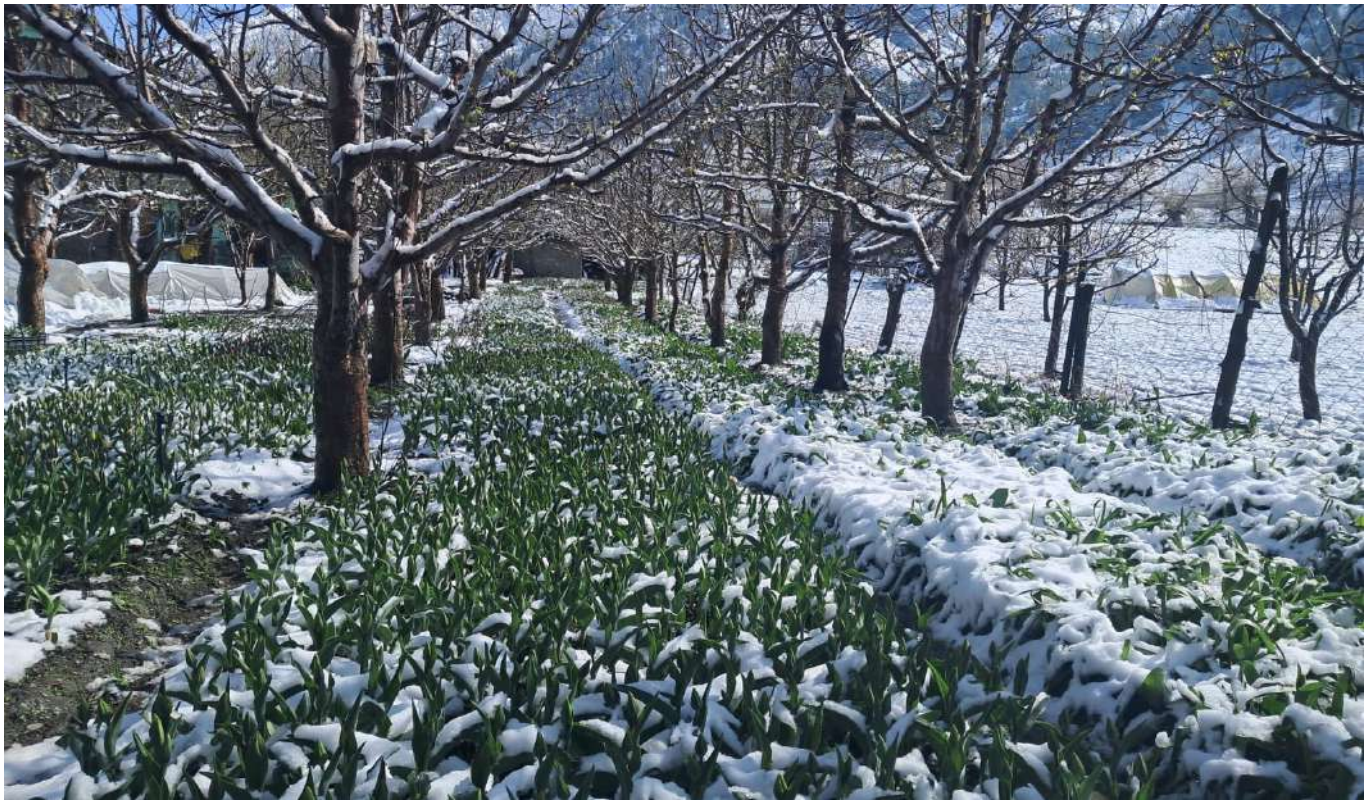

मजिन्दर ने बनाया फूलों की खेती को एक विकसित व्यवसाय

पंजाब में प्रकृति से परिपूर्ण गाँव, मानकपुर, लुधियाना जिले; के किसान मंजिन्दर सिंह ग्रेवाल की उम्र 48 वर्ष है। इन्होने सिविल इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन की है और वर्ष 2010 से फूलों की खेती कर रहे है। वे अब तक अनेक प्रकार के फूलों की खेती कर चुके हैं, जैसे कि गुलदाउदी, ग्लैड, गेंदा, ट्यूबरोज़, और लिमोनियम। वर्तमान में वह तीन एकड़ भूमि पर फूलों की खेती कर रहे है। जिससे उनको काफी फायदा हो रहा है, उनका मुख्य बाज़ार लुधियाना है, लेकिन वह अपने फूलो को जालंधर और जयपुर के बाजारों में भी बेचते हैं।

वह बताते है, म फ्लॉरिकल्चर मिशन व सीएसआईआर-आईएचबीटी के बारे में डॉ. अनुराधा जी के माध्यम से पता चला था, जो कि (पी ए यू), लुधियाना से संबंधित हैं। उनसे मिलकर मैंने मिशन की पूरी जानकारी ली और आईएचबीटी से संपर्क किया जिसके बाद मानो मेंरी जिंदगी बदल गयी हो।

फ्लॉरिकल्चर मिशन के माध्यम से नए किसानों को फूलों की खेती के क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर मिलता है। इससे पुराने किसानों को भी लाभ होता है, लेकिन खासकर उन किसानों को जो इस व्यवसाय में नए हैं। फूलों की खेती शुरू करने के लिए, पहले कम क्षेत्र में उपयुक्त भूमि का चयन करना और बाजार का अध्ययन करना आवश्यक होता है। आर्थिक दृष्टि से, फूलों की खेती अन्य कृषि उत्पादों की तुलना में अधिक लाभकारी सिद्ध हो सकती है और मात्र एक ऐकड़ से 3-3.5 लाख रुपये तक की आय प्राप्त की जा सकती है।

फूलों की खेती एक ऐसा व्यवसाय है जो न केवल मुझे आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि साथ ही नए किसानों को भी आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। फ्लॉरिकल्चर मिशन जैसी पहल के माध्यम से, हम सभी मिलकर इस क्षेत्र में नए रूप से किसानी को साहसिकता दे सकते हैं और विकास की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

गेंदे की खेती ने लौटाई परिवार की मुस्कान

हिमाचल प्रदेश, कांगड़ा; तहसील ज्वालामुखी के छोटे से गाँव धनोट के किसान श्री दिनेश सिंह ठाकुर पेशे से मैकेनिकल इंजीनियर रह चुके है । इनकी उम्र 50 वर्ष है, कोविड महामारी के चलते इनकी 22 साल पुरानी नौकरी चली गई थी। इसी कारण से दिनेश जी कई महीनो के लिए अवसाद में भी चले गए जिससे इनका परिवार आर्थिक तंगी से परेशान रहने लगा। लेकिन इनके गाँव के पूर्व प्रधान श्री विजय सिंह राणा ने इन्हे फूलों की खेती के लिए मार्गदर्शन दिया तथा सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में बताया।

इसके बाद इन्होंने सी एस आई आर -आई एच बी टी पालमपुर से संपर्क किया व फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे मे पूरी जानकारी ली तथा अपनी पुरानी ज़मीन पर खेती करने का फैसला किया। यह पिछले एक साल से फूलों की खेती कर रहे है। इससे पहले यह मक्के और गेहूं की खेती करते थे, जिसमे उनका बुबाई , जुताई, खाद, बीज तथा ट्रैक्टर लेबर आदि खर्च कमाई से ज्यादा हो जाता था।

परंतु आईएचबीटी ने इन्हे, इनके खेती क्षेत्र के हिसाब से गेंदे के फूलों की खेती करने का सुझाव दिया । दिनेश जी जब पहली बार संस्थान से सब्सिडी पर गेंदे के फूलों के पौधे लेकर गए तो इनको लगभग 30,000 रुपयों का लाभ हुआ, जो की इन्हे फायदे का सौदा लगा व इन्होंने इस खेती मे और मेहनत करनी शुरू की। दिनेश जी के पास 30 कनाल ज़मीन है और अभी 12 कनाल ज़मीन पर फूलों की खेती कर रहे है। लेकिन आने वाले समय मे 18 कनाल ज़मीन पर फूलों की खेती का विचार है। जो की इनकी कमाई को और भी बढ़ा देगी और जैसा की इनका मानना है इस बार की फसल इन्हे 2 लाख तक की राशि दिलवा सकती है।

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहा जाता है और यहाँ बहुत से प्रसिद्ध मंदिर है। जिनमे से ज्वालामुखी भी एक है, हर वर्ष लाखों श्रद्धालु यहाँ आते है तथा फूलों की मांग अधिक रहती है। जिससे दिनेश जी जैसे किसानों को अपनी फसल बेचने के लिए ज्यादा दूर भी नहीं जाना पड़ता और अब विवाहों तथा अन्य कार्यक्रमों में भी फूलों का प्रयोग ज्यादा स्तर पर होना शुरू हो गया है, जिससे आमदनी और भी अच्छी हो जाती है। जो, गेंदे का फूल पहले 70-80 किलो बिकता था वोही त्योहारों व शादियों के समय 150 से 180 रुपये किलो तक चला जाता है।

दिनेश जी का संदेश;

मैं अपने किसान साथियों को यह कहना चाहता हूं कि फूलों की खेती एक लाभदायक व्यपार है व फूलों को खेती से पहले उसकी मार्केट ढूँढना जरूरी है, आज फूलों की खेती करके मेरा परिवार खुशहाल है और मैं उनकी सारी ज़रूरतें भी पूरी कर रहा हूं, जिससे मेरे बच्चों के चेहरों पर रौनक लौट आई है, तो मेरा सभी किसान साथियों से अनुरोध है की फूलों की खेती को अपनाए और सीएसआईआर -फ्लॉरिकल्चर व आईएचबीटी की मदद और सलाह लें।

बागवानी मे फूलों की खेती के व्यवसाय तक का सफर

नरेंद्र पाल ठाकुर, जिनकी आयु 48 वर्ष है, गाँव बगसियाड, थुनाग मंडी के निवासी हैं। उनकी शिक्षा 12वीं तक हुई है। नरेंद्र जी, पिछले 9 सालों से फूलों की खेती कर रहे है। उन्होंने अपनी खेती में कार्नेशन, लिलियम, और जिप्सोफिला लगाए है साथ ही, उनके पास सेब के बगीचे भी है।

प्रारंभ से ही उनका ध्यान बागवानी पर था, लेकिन अनियमित मौसम के कारण वह इसे करने में असफल रहे। फिर उनके किसी मित्र ने उन्हे फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी दी। जिसके बाद उन्हे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुडने का मौका मिला। सीएसआईआर-आईएचबीटी से तकनीकी सहायता व प्रशिक्षण मिलने पर जो वो पहले फूलों की खेती खुले में करते थे, बाद में पॉलीहाउस में करने का फैसला किया। इस निर्णय से उनकी खेती में काफी बढ़ोतरी हुई जिससे उनके आर्थीकी में भी सुधार हुआ।

अब, उनका ध्यान मुख्य रूप से फूलों की खेती पर है जिससे उनके क्षेत्र में और भी किसान फूलों की खेती में जुड़ रहे हैं। नरेंद्र जी फूलों की खेती के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहे हैं व उन्होंने 'बगसियाड फार्मर सोसाइटी' की स्थापना की है, जिसके वे अध्यक्ष भी हैं। इस सोसाइटी में उनके साथ 250-300 किसान जुड़े हुए हैं, जो 300 से लेकर 2000 वर्ग मीटर में फूल उगाते हैं।

नरेंद्रजी के द्वारा उगाए गए फूलों से, उन्हें सालाना 7-8 लाख रुपये की आमदनी होती है। इससे साबित होता है कि सही दिशा और मेंहनत से किसान अपने क्षेत्र में सफल हो सकते हैं, चाहे वह फूलों की खेती हो या किसी और खेती का काम।

गाँव खंगसर: फूलों से भरा किस्सा

अशोक कुमार, गाँव खंगसर, लाहौल, हिमाचल प्रदेश के निवासी हैं। उनका संघर्ष और मेहनत से भरपूर जीवन प्रेरणास्त्रोत है। अशोक जी ने अपने किसानी जीवन मे न केवल नई दिशाएँ दिखाईं हैं, बल्कि उन्होंने अपनी किसानी को एक उच्च स्तर तक पहुँचाया है।

अशोक जी ने ग्रेजुएशन तक की शिक्षा प्राप्त की है लेकिन उनका रुझान अपनी मूल्यवान ज़मीन और उसपर खेती की ओर था। 10 साल पहले, जब अशोक जी ने अपने खेतों में एशियाई लिली और ओरिएंटल लिली की खेती की शुरुआत की तो उन्हे संघर्ष का सामना करना पड़ा था। परंतु उन्होंने अपनी मेहनत और जागरूकता के साथ इस क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की।

सीएसआईआर-आईएचबीटी के द्वारा प्रदान की गई ट्रेनिंग ने उन्हें लिलियम की खेती में नई तकनीकों और विज्ञान से अवगत होने का मौका दिया। वह अपनी 5-6 बीघा क्षेत्र में लिलियम की ही खेती करते है, जो उन्हें अच्छी आमदनी देती है। उन्होंने दिल्ली को मुख्य बाजार निर्धारित किया है, जहाँ उनके एशियाई लिलियम के फूल बहुचर्चित हैं और उनकी मांग बढ़ती जा रही है।

अशोक जी का सपना और मेहनत उन्हें नई ऊचाइयों की ओर ले जा रहा है। उनकी योजना है कि वह अपनी खेती को और भी बढ़ावा दें और अधिक बड़े बाजारों में अपना प्रसार करें।

अशोक कुमार की यह यात्रा सिर्फ एक किसान की कहानी नहीं है, बल्कि एक सफल और प्रेरणादायक उदाहरण का स्रोत है जो विश्वास से अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।

कश्मीर सिंह: सफल फूल उद्यमी की कहानी

नैनीताल के कश्मीर सिंह की कहानी एक प्रेरणास्पद उदाहरण है। उनकी जिंदगी मे कई कठिनाइयाँ आई, लेकिन उन्होंने हमेंशा हिम्मत और संघर्ष से उनका सामना किया। कश्मीर जी 43 वर्ष की उम्र में अपने गाँव में फूलों की खेती का संचालन करते हुए एक स्वावलंबी उद्यमी बने है। वह पहले वाहन चालक थे, लेकिन फिर उन्होंने अपनी किस्मत में बदलाव करने का निर्णय लिया। जब वह बलवीर कंबोज जी से मिले तब उन्हें फूलों के प्रति अपना रुझान पहचानने का मौका मिला। बलवीर जी जो की स्वयं सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के लाभार्थी है , उनके प्रेरणादायक संघर्ष ने उन्हें फूलों की खेती में प्रेरित किया और उन्होंने जल्द ही इस क्षेत्र में अपनी पहचान बना ली।

सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन से प्रेरणा लेकर ,कश्मीर जी ने अपने 200 वर्ग मीटर के खेतों में रजनीगंधा, ग्लैड, जर्बेरा, और जिप्सोफिला जैसे प्रमुख फूलों की खेती की है। उन्होंने समय रहते ही अपने फूलों की देखभाल की और बाजार में उनका प्रसार किया। जिससे उनको मार्केट को जानने व उसमें काम करने के तरीको का पता चला। आजकल वह अपनी खेती के विस्तार में लगे है तथा अन्य बड़े पॉलिहाउस लगाने के बारे में सोच रहे हैं, जिससे वे अपने उत्पादन की गुणवत्ता को और बढ़ा सकें। उनका बाजार रामनगर, हल्द्वानी और काशीपुर में रहा है, जहाँ उनकी फूलों की मांग बढ़ती जा रही है।

कश्मीर सिंह जी की कहानी हमें यह सिखाती है कि सफलता के लिए ज़रूरी नहीं है कि हमारे पास बड़ा उद्योग हो, बल्कि हमें अपने सपनों की दिशा में सही कदम बढ़ाना होता है तथा मेंहनत और दृढ़ संकल्प से अपना लक्ष्य हासिल करना होता है।

फूलों की खेती से घनश्याम जी सफलता की ओर

फूलों की खेती एक विशेष और प्रेरक क्षेत्र है, जो किसानों को न केवल आर्थिक रूप से बल्कि कृषि अनुभवी रूप से भी संतुष्टि प्रदान करता है। आज हम आपको एक ऐसे किसान की कहानी बताने जा रहे हैं, जिन्होंने फूलों की खेती में अपनी योग्यता और प्रतिबद्धता से सफलता प्राप्त की है।

घनश्याम जी ,जो की चच्योट, मंडी से हैं, एक प्रेरणास्पद उदाहरण हैं। 45 साल की उम्र में भी उनका उत्साह और आत्मविश्वास नौजवानों जैसा है। उन्होंने ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई की है और वर्ष 2002 से फूलों की खेती कर रहे हैं।

घनश्याम जी का सफर फूलों की खेती में पहले नौणी यूनिवर्सिटी से ट्रेनिंग लेने से शुरू हुआ। उन्होंने अपनी पहल, खुले वातावरण में फूलों की खेती से शुरू की । फिर उन्होंने सही तरीके से प्रशिक्षण लिया और सीएसआईआर के साथ जुड़ गए। घनश्याम जी की मुख्य फसलें जर्बेरा, कार्नेशन, और रजनीगंधा हैं। उनका अनुभव दिखाता है कि किसान के लिए फूलों की खेती आर्थिक रूप से लाभप्रद है तथा फूलों की देख- भाल करना अपने आप मे एक विशेष अनुभव है।

घनश्याम जी का संदेश;

किसानों को सरकारी सहायता तो लेनी ही चाहिए पर साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए और भी प्रयास करते रहने चाहिए। उन्होंने बताया कि बेहतर मार्केटिंग और व्यापारिक योजना के साथ-साथ फूलों की गुणवत्ता पर भी ध्यान देना चाहिए।

घनश्याम जी की कहानी हमें यह सिखाती है कि किसान कृषि क्षेत्र में उच्च शिक्षा का महत्व समझते हैं और कृषि व्यवसाय को सफल बनाने के लिए नवाचार और विशेषज्ञता का सही उपयोग करते है।

नरेश तिवारी: उत्तराखंड के एक प्रेरणादायक किसान की कहानी

नरेश तिवारीजी, जो नैनीताल, उत्तराखंड के एक छोटे से गाँव के रहने वाले है, उनका जीवन एक प्रेरणादायक किसान के तौर पर उदाहरण हैं जो की मेहनत की कहानी से भरपूर है।

नरेश ने एम.कॉम की पढ़ाई की है, लेकिन शुरुआत से उनकी रुचि कृषि में ही थी । उनका परिवार खेती के क्षेत्र से जुड़ा है और कुछ सालों से उन्होंने ग्रीनहाउस मे फ़सल लगाना भी शुरू किया है। उनके ग्रीनहाउस में जर्बेरा, लिलियम (एशियाटिक और ओरियंटल) और गुलदाउदी फूलों की खेती हैं।

नरेश हर वर्ष फूलों की खेती से करीब 8-9 लाख रुपये की कमाई कर लेते है, जो की सिर्फ जर्बेरा, लिलियम और गुलदाउदी से ही मिल जाता है। अब वह दूसरे फूलों को लगाने के बारे मे भी सोच रहे है। यह उनकी लगन और मेहनत का ही परिणाम है।सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन का उनकी फूलों की खेती मे महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

नरेश जी का संदेश

किसी भी किसान की सफलता का राज उनकी मेहनत, जानकारी, और अनुभव में है। अगर किसान फूलों की खेती शुरू करना चाहते हैं, उन्हें पहले इस क्षेत्र के अनुभवी लोगों से सीखना चाहिए।

नरेश जी की कहानी यह दिखाती है कि सपनों को पूरा करने के लिए कोई भी कठिनाई बड़ी नहीं होती, यदि आप लगन से काम करते हैं और सही दिशा में अग्रसर होते हैं।

फूलों की खेती: स्वप्नों की खोज

गुरप्रीत सिंह, जो मोगा, पंजाब के निवासी है, एक वास्तविक संघर्ष और समृद्धि की कहानी का प्रतीक है। 31 साल की उम्र में, उन्होंने फूलों की खेती में अपनी पहचान बनाई है और अपने क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं को बढ़ावा दिया है।

गुरप्रीत ने गेंदा, गुलदाउदी, और ग्लैड की खेती शुरू की है, और साथ ही गेहूं और कनक जैसी अन्य फसलों की भी खेती करते आ रहे है। फूलों की खेती में उन्होंने अपने 3 एकड़ क्षेत्र का उपयोग किया है।

गुरप्रीत की कहानी में ग्लैड की खेती का एक महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने सीएसआईआर-आईएचबीटी से प्रशिक्षण, उच्च गुणवक्ता वाले पौधो को प्राप्त करने मे सहायता प्राप्त की है ।

गुरप्रीत के अनुसार, फूलों की खेती कनक जैसी फसलों की तुलना में काफी फायदेमंद है। इसमें काम के लिए अधिक लेबर की आवश्यकता नहीं होती है, और फसल को संभालने में अधिक आसानी होती है। मोगा की मार्केट में उनकी फूलों की खेती की मांग बढ़ती जा रही है, जो गुरप्रीत के लिए एक आर्थिक आय का स्रोत है, और साथ ही उन्हें भी बढ़ते रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

गुरप्रीत की यह कहानी साबित करती है कि किसानों के लिए फूलों की खेती एक सशक्त और लाभदायक विकल्प हो सकती है, जो न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करती है, बल्कि स्थानीय समुदाय के विकास में भी सहायक होती है।

फूलों की खेती, एक अविस्मरणीय अनुभव;

.

अनिल शर्मा, जो मंडी, हिमाचल प्रदेश के निवासी है, जिन्होंने अपने किसानी जीवन के एक नए अध्याय की शुरुआत फूलों की खेती से की है। उनका यह सफर अपने पूरे क्षेत्र में उत्साह और प्रेरणा का स्रोत बन गया है।

अनिल ने बताया कि उन्होंने वर्ष 2014 से फूलों की खेती की शुरुआत की थी, जब उन्होंने अपने पारंपरिक कृषि फसल के काम को छोड़कर इस दिशा में कदम रखा। उन्होंने पॉलीहाउस का प्रशिक्षण लिया और फिर उसके बाद फूलों की खेती शुरू की। उन्होंने अपनी खेती में कार्नेशन, लिलीयम, यूसटोमा और जिप्सोफिला जैसे प्रमुख फूलों को उगाया है।

अनिल ने बताया कि उन्हें एक बार कृषि विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण के लिए जाने का मौका मिला, जहां उन्हें डॉ भार्गव का संपर्क मिला। उसके बाद उन्होंने सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी हासिल की, जो उनके किसानी जीवन को एक नई दिशा देने में सहायक हुआ।

उन्होंने बताया कि उनके फूलों का मार्केट दिल्ली में है और उनकी कार्नेशन की फसल से महीने का 1-1.30 लाख तक का प्रॉफिट होता है। उन्होंने साझा किया कि फूलों की खेती में व्यापक लाभ है, लेकिन समय-समय पर ध्यान देना और मेहनत करना भी आवश्यक है। अनिल शर्मा की कहानी हमें यह दिखाती है कि नई तकनीकों और अवसरों का सही समय पर उपयोग करने से किसान अपने क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छू सकता है।

फूलों की खेती: उत्तराखंड के सलीम जी का एक सफल व्यवसाय

मेरा नाम सलीम है और मैं उधम सिंह नगर, उत्तराखंड का निवासी हूँ। अपनी पूरी जिंदगी में मैंने फूलों की खेती के क्षेत्र में काम किया है। मैंने अपने क्षेत्र में जर्बेरा, लिलियम, कार्नेशन, गुलाब, गुलदाउदी और लिमोनियम जैसे विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती की है।

मेरे पास 1000 वर्ग मीटर में फूलों की खेती की लिए पॉलिहाउस है, जिसमें सभी फूल लगाए जाते हैं। ग्लैड को खुले वातावरण मे लगाते है। मैंने वर्ष 2008 से फूलों की खेती शुरू की है और इसके दौरान कई अनुभव प्राप्त किए हैं। कुछ समय पहले, मैं कर्तित पुष्प क्लस्टर पर कंबोज जी के साथ भी जुड़ा हूँ, जिससे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला व क्लस्टर मे काम करने से फायदा भी ज्यादा मिला।

हमारा फूलों का मुख्य बाजार दिल्ली में है, लेकिन स्थानीय बाजार में भी हमारे फूल अच्छे बिकते हैं। मैं फूलों की खेती से यह कह सकता हूँ कि यह एक आर्थिक लाभ का अच्छा स्रोत हो सकता है जिसमे ज्यादा मेहनत नहीं है। कंबोज जी के माध्यम से हमें सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में भी जानकारी मिली। इससे हमारी खेती को और भी विकसित करने का अवसर मिला है।

सलीम जी का संदेश

आखिरकार, मैं यह कहूंगा कि फूलों की खेती एक सशक्त व्यवसाय है, जिसमें समृद्धि और संतोष दोनों हैं और मैं दूसरों को भी इसमें निवेश करने की सलाह दूंगा।

राजेन्द्र कुमार: फूलों की खेती से बनी एक अनूठी कहानी

शिमला मे फूलों की खेती की यह कहानी हमें राजेन्द्र कुमार के संघर्ष और सफलता की ओर ले जाती है। राजेन्द्र, जो कि शिमला के निवासी हैं, न केवल अपने परिवार के लिए बल्कि साथी समुदाय के लिए भी एक महत्वपूर्ण आदमी बन चुके हैं।

राजेन्द्र की उम्र 36 साल है और उन्होंने ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई की है। वे फूलों की खेती में 16 साल से काम कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने लिलियम, कार्नेशन, और स्टैटिस जैसे विभिन्न प्रकार के फूल लगाए हैं। उनके पास 3 पॉलीहाउस हैं, जिनसे वह सालाना 10-15 लाख आराम से काम लेते है।

राजेन्द्र का कहना है कि फूलों की खेती से उन्हें अच्छा लाभ मिलता है, खासकर जब बाजार में अन्य फसलों की मंदी होती है। उनके अनुभव से यह पता चला की उनके पूर्वज सिर्फ सब्जियों की खेती करते थे, लेकिन फूलों की बढ़ती मांग को देखते हुए, उन्होंने फूलों की खेती में कदम रखा। सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के कारण उन्हे काफी फायदा हुआ जिससे उन्हे अच्छी गुणवत्ता के पौधे व प्रशिक्षण मिला।

इस सफलता की कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि किसान अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता के साथ विकास कर सकते हैं, और अपनी मेहनत और निरंतर प्रयासों से न केवल अपने बल्कि अपने कृषि समुदाय की भी सहायता कर सकते हैं।

राजेन्द्र का संदेश है कि फूलों की खेती मे आने वाले लोगों को रोजगार का भी अच्छा मौका मिलता है। उन्होंने अपने क्षेत्र में फ्लॉरिकल्चर का काम अपनाया है, जिससे उनके साथी किसानों को भी आय का अच्छा साधन मिला है।

फूलों की खेती: एक आत्मनिर्भर किसान की कहानी

विनोद कुमार, एक साधारण किसान है, जो कुल्लू, हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से गाँव से हैं, अपनी फूलों की खेती में 17 सालों से लगे हुए हैं। उन्होंने लिलियम, जर्बेरा, कार्नेशन और गुलदाउदी जैसे विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती करते हुए, इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है।

फूलों की खेती ही उनके लिए मुख्य आय का स्रोत है। कोविड-19 महामारी के प्रकोप से पहले, विनोद लगभग 12-13 बिघा भूमि पर फूलों की खेती करते थे। लेकिन इस महामारी के दौरान, उन्हें काफी नुकसान हुआ ।

विनोद ने वर्ष 2007 से 2012 तक पोलिहाउस मे फूलों की खेती और फिशरीज़ में भी अपनी मेहनत से नाम कमाया। उन्होंने अपने साथी किसानों से छोटे-मोटे खेती के काम का अनुभव प्राप्त किया। लॉकडाउन के बाद, विनोद का व्यापार काफी नुकसान में आया, लेकिन सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर व सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर से मिली मदद तथा प्रशिक्षण ने उन्हें फिर से मजबूत किया।

विनोद का बिजनेस बढ़ाने में फ्लॉरिकल्चर मिशन और संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. भव्य का बहुत बड़ा हाथ है। इस मिशन से जुड़ने के बाद विनोद अपने व्यवसाय को मजबूत करने में सफल रहे हैं। विनोद किसान भाइयों को बताते हैं कि फूलों की खेती एक उत्कृष्ट व्यापारिक विकल्प है, जिसके लिए उन्हें उचित ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही, फूलों की खेती में कम मेहनत और अधिक लाभ होता है।

उनका बाजार दिल्ली है, जहां वे अपने फूलों को बेचते हैं। विनोद को हर महीने 20 से 25 हजार रुपये का लाभ होता है।

विनोद की कहानी हमें यह बताती है कि संघर्ष और मेहनत के साथ हर मुश्किल को पार किया जा सकता है, और किसानों के लिए फूलों की खेती एक उत्कृष्ट विकल्प हो सकता है।

विनोद का संदेश

फूलों की खेती में लगने वाला प्रत्येक किसान आत्मनिर्भरता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ा रहा है। यह विकल्प न केवल उन्नति का माध्यम है, बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का एक उचित साधन भी है।

अजय कुमार जोशी: एक किसान की कहानी

अजय कुमार जोशी, रामगढ़, उत्तराखंड के निवासी, एक ऐसे किसान हैं जिन्होंने अपने उत्साह और मेहनत से फूलों की खेती को अपनाया। इन्होंने वर्ष 2007 में होटल मैनेजमेंट की पढ़ाई के बाद नौकरी करने का सपना देखा था। लेकिन जीवन की निजी विवशता,उन्हें किसानी की दुनिया में ले आई। उन्होंने होटल मैनेजमेंट की नौकरी छोड़ दी और फूलों की खेती में श्री संजय पांडेजी के साथजुड़ गए जिन्हे वे अपना गुरु भी मानते है।

शुरुआत में, अजय ने केवल 0.5 एकड़ में फूलों की खेती की, लेकिन उनका साहस और मेहनत ने उन्हें क्लस्टर फार्मिंग का रास्ता दिखाया। उस समय कोविड-19 महामारी के बाद खेती का काम अच्छा नहीं चल रहा था, लेकिन सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन की मदद से उन्होंने अपनी खेती को बचाया।

उन्होंने सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर से सब्सिडी पर पौधे लिए तथा इस सब्सिडी के सहारे, अजय ने अपनी खेती को और भी बढ़ावा दिया। प्रौद्योगिकी और उन्नत तकनीकों का उपयोग करने के लिए नवाचार किया। उन्होंने अब अपने क्षेत्र में काफी उत्पादन बढ़ाया है और साथ ही अधिक मुनाफा भी कमाया है। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, बल्कि उनके परिवार और समुदाय को भी लाभ मिला है। अजय के फूलों का मार्केट हल्द्वानी में है, लेकिन दिल्ली मार्केट में भी उत्पादों की बिक्री की अच्छी संभावना है। उनके क्लस्टर में, फुलों की खेती से 28-30 लाख तक का लाभ होता है, जबकि व्यक्तिगत रूप से उन्हें 4-5 लाख तक का लाभ होता है।

अजय कुमार जोशी की कहानी हमें यह सिखाती है कि जिंदगी के हर मोड़ पर, हार नहीं, बल्कि उत्साह और संघर्ष हमेशा जीत के रास्ते की ओर ले जाता हैं। और अगर सरकार अच्छे किसानों के लिए सब्सिडी प्रदान कर रही है, तो हमें उसका फायदा उठाना चाहिए।

70-साल की उम्र मे शोभा देवी का फूलों की खेती से जुड़ाव: महिला सशक्तिकरण का एक उदाहरण

कांगड़ा ज़िले की तहसील देहरा के गाँव खबली की रहने वाली श्रीमती शोभा देवीजी की कहानी अद्वितीय है। इनकी उम्र 70 साल है और इन्होंने पाँचवी तक की पढ़ाई की है। इनका कहना है, मैँ खेतीबाड़ी मे बचपन से जुड़ी हूँ , लेकिन फूलों की खेती को मैंने सिर्फ दो साल पहले शुरू किया है। पिछले साल, हमने गेंदे के पौधों को लगाया था, जो की हमे नई आशा और लाभ देने मे कामयाब रहा।

बात की जाए साल 2023 की तो उन्होंने 5 कनाल गेंदे की खेती से अस्सी हजार से एक लाख का लाभ लिया है । शोभा देवी की ये नई प्रेरणादायक कहानी देश के हर किसान के लिए एक संदेश और प्रेरणा का स्रोत बन रही है कि कैसे एक इतनी उम्र की महिला बेहतर फूलों की किसानी सीखने से जुड़ी है व महिला सशक्तिकरण का उदाहरण बनी है।

उन्होंने बताया की जब वह मशरूम की ट्रेनिंग के लिए एक सीएसआईआर--आईएचबीटी गई हुई थी तब उन्हे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे पता चला। वह बताती है, मैंने गेंदे के फूलों की खेती की जानकारी प्राप्त की। अतः मैंने वहाँ से पौधे खरीदे और उन्हें लगाने का निर्णय लिया। वैज्ञानिको से बात करने पर, वहाँ की सहायता और सुझावों से मुझे बहुत मदद मिली । मैं पहले सब्जियों की खेती भी करती थी, लेकिन वर्तमान में उम्र इतनी हो गई है कि सब कुछ एक साथ नहीं किया जा सकता है। फूलों की खेती मेरे लिए एक अच्छा विकल्प बन गया है, क्योंकि इसमें मेरी खुद की भी रुचि है।

गेंदे की खेती में हमने इस साल अच्छा प्रदर्शन किया व इससे हमें अच्छा लाभ हुआ है।

शोभा देवी जी का संदेश;

मैं फूलों की खेती से काफी प्रेरित हूं और उन सभी किसानों को यही सुझाव दूंगी की जो भी गेंदे की फूलों की खेती करेगा, वह नुकसान में नहीं रहेगा, बल्कि प्रॉफिट में ही रहेगा। हर विघ्न को पार करने का तरीका सीखना चाहिए और कभी हार नहीं मानना चाहिए।

अवतार सिंह की सफलता का राज़ है गेंदे की खेती

मेरा नाम अवतार सिंह है, मैंने बी.ए की है और पिछले 4-5 सालों से मैं फूलों की खेती कर रहा हूं। मेरा रुझान फूलों की खेती की ओर तब बढ़ा था, जब किसी व्यक्ति ने एक दिन पलमपुर बाज़ार में फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे मे बताया। फिर हम सीएसआईआर-आईएचबीटी के संपर्क मे आए और फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे मे पता किया। हमें वहां कार्नेशन के फूलों की खेती के बारे मे जानकारी मिली। जब मैं अपने गाँव लौटा, तो मैंने फूलों की खेती शुरू की और साथ ही मधुमक्खी भी पालना शुरू किया।

सीएसआई-आईएचबीटी से मिली मदद ने हमें बहुत फायदा पहुँचाया। जैसे कि फूलों के पौधों में बीमारी होने पर स्प्रे के बारे में जानकारी और सब्सिडी पर मिलने वाले पौधों की जानकारी, समय पर प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने हमें मधुमक्खी पालन हेतु बॉक्स भी प्रदान किए, जिससे हमें रोजगार का सुनहरा अवसर मिला।

हमें आईएचबीटी द्वारा मिले प्रशिक्षण से बहुत सी चीजें सीखने का मौका मिला ; कैसे सही तरीके से पौधों की देखभाल करनी है, फूलों को बेचने हेतु बाज़ार की जानकारी आदि । हमने 9-10 कनाल ज़मीन में गेंदा लगाया और इससे हमें एक सीज़न में 1.5 से 2 लाख रुपये का मुनाफा हुआ।

मैंने सब्जियों की खेती भी की, लेकिन वह इतना मुनाफा दिलाने में सक्षम नहीं थी और दाम भी अच्छा नहीं मिलता था। अगर आप भी किसानी में कदम रखना चाहते हैं, तो गेंदे की खेती एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इससे न केवल आपको अच्छा मुनाफा मिलेगा, बल्कि आपको रोजगार का भी अच्छा अवसर मिलेगा। इसे ध्यान में रखते हुए आप अपने क्षेत्र में अगली ऊँचाइयों की ओर बढ़ सकते हैं।

अवतार सिंह का संदेश

गेंदे की खेती में सफलता प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि आपके पास नजदीकी मंदिर या मार्केट हो। इससे न केवल उचित मूल्य मिलता है, बल्कि आपको अच्छे दाम में बिक्री का भी सुनहरा अवसर मिलता है।

अंकुर ठाकुर: एक सफल फूल उद्यमी की कहानी

फूलों की खेती एक ऐसा विषय है जो सटीक ज्ञान और मेंहनत की मांग करता है और अंकुर ठाकुर इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ग्रेजुएशन के बाद, उन्होंने खुद को एक सफल किसान बनाने का संकल्प किया और फूलों की खेती में अपने कौशल को प्रदर्शित किया।

फूलो की खेती से पहले अंकुर जी बैंक ऑफ इंडिया में अस्थायी पद पर नौकरी करते थे, परंतु घर के हालात ठीक न होने के कारण उन्हे नौकरी छोडनी पड़ी। फिर उन्होने पारिवारिक व्यापार के साथ-साथ फूलों की खेती की शुरुआत की व गुज़ारे लायक सब्जियां भी लगाई। शुरुआत में उन्हे बहुत सी दिक्कतों का सामना करना पड़ा और कोविड-19 के समय में अंकुर जी की कठिनाइयाँ और भी बढ़ गई परंतु उन्होने सबका सामना किया तथा अपने व्यावसाय को बाज़ार में स्थापित किया।

अंकुर जी बताते है, सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में मुझे आस पास के किसानों से पता चला, फिर मैने सीएसआईआर-आईएचबीटी के वैज्ञानिक डॉ भव्य भार्गव से संपर्क किया। जिन्होंने मुझे, फ्लॉरिकल्चर मिशन व आईएचबीटी से मिलने वाले फ्लॉरिकल्चर प्रशिक्षण के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण के बाद मैने ज्यादातर ग्लैड के बल्ब लिए जिन्हे लगाने के बाद मुझे काफी आर्थिक लाभ हुआ, अब मैं 10 लाख तक की कमाई साल में लगभग कर लेता हूँ।

अंकुर ने अपने 18 कनाल क्षेत्र में कार्नेशन, ग्लैड और लिलियम जैसे विभिन्न प्रकार के फूल उगाए है। जिससे उनकी अच्छी-खासी कमाई हो जाती है उन्होंने यह साबित किया कि किसान अपने क्षेत्र में नए और विविध उत्पादों का विकास कर सकते हैं।

अंकुर ठाकुर जैसे उदाहरण हमें यह दिखाते हैं कि अगर आप मेंहनत, संघर्ष और सही दिशा में प्रयास करें, तो कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

अंकुर का संदेश साफ है - ***अगर किसान फूलों की खेती करना चाहते हैं, तो उन्हें सही ज्ञान और कौशल का प्रयोग करना चाहिए। वे अपने समुदाय के किसानों को सलाह देते हैं कि वे सही तरीके से तकनीकी सीखें और समय पर अपने खेतों की देखभाल करने के लिए उचित प्रशिक्षण लें।***

सोलन के किसान नवीन कुमार :फूलों की खेती में नया उत्साह और उद्यमिता

नवीन वर्मा, चैल, सोलन के एक युवा किसान है, जो 8 साल से फूलों की खेती कर रहे हैं। नवीन एक किसान परिवार से संबंध रखते है और उनका दिल शुरुआती समय से किसानी में है। पहले वह मौसमी फसल ही उगाते थे और उससे ही अपने परिवार का गुज़ारा करते थे, फिर उन्हे अपने गाँव के किसानों से सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी हुई।

उन्होंने इसके चलते सीएसआईआर-आईएचबीटी से प्रशिक्षण लिया और साथ में गुलदाउदी, कार्नेशन, और लिलियम के फूलों के पौधे भी लिए जिनको उन्होंने अपने 3000 वर्ग मीटर क्षेत्र में लगाया। वह बताते है उन्हे फूलों की खेती से बहुत फायदा हुआ है ।

नवीन का सपना फूलों की खेती को बढ़ावा देने का है। उनकी फूलों की मार्केट दिल्ली में है, जहां उन्हें अच्छा मुनाफा हासिल होता है और इनकी सालाना फूलों की खेती से 10-15 लाख मुनाफा है। नवीन ने अपने खेतों में उचित तकनीकों का प्रयोग किया है और उनके पिता के साथ मिलकर खेती में नवाचारिता लाए है। उनका उत्साह और संघर्षशीलता उन्हें इस क्षेत्र में सफलता की ओर आगे बढ़ने में मदद कर रही है। उनका सपना है कि वे अपनी खेती को और भी विस्तारित करें और अधिक लोगों को अपने क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग दिखाएं।

नवीन जी का संदेश

किसानी एक कला है जो सिर्फ खेती नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, अगर इसे समझ कर किया जाए तो यह समृद्धि और संतोष की ओर ले जाती है। मैने देखा है कि किसानी में लगी मेरी और मेरे पिता की मेंहनत ने हमें कैसे एक बेहतर जीवन की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

कमल देव की नई सोच और नवाचार की कहानी

बगसियाड मंडी के कमल देव की यह कहानी वास्तव में प्रेरणादायक है। उनकी कहानी में एक विशेषता यह है कि वह एक युवा किसान हैं, जिन्होंने अपने युवावस्था में ही किसानी को अपनाया। कमल देव ने बारहवीं कक्षा की पढ़ाई करने के बाद ही किसानी का मार्ग चुन लिया था व अपने गाँव के दूसरे किसानों की तरह मौसमी खेती करते थे। फिर उन्हे सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में उनके चाचा से पता चला, जो बहुत पहले से फूलों की खेती करते आ रहे है तथा सीएसआईआर आईएचबीटी से भी जुड़े है, उनसे बात करने पर उन्हे फूलों की खेती में और रुचि हुई।

बाद में, फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में अच्छे से जानने के लिए उन्होंने सीएसआईआर-आईएचबीटी से संपर्क किया। आईएचबीटी से उन्हे सही जानकारी व प्रशिक्षण मिला, साथ ही फूलों के पौधों पर भी सब्सिडि प्राप्त हुई। जिसके बाद उन्होंने अपनी खेतों में कार्नेशन के फूल उगाए।

कमल जी ने अपने खेती के क्षेत्र में तकनीकी ज्ञान और उत्पादन की योग्यता के साथ-साथ, नई सोच और नवाचार का भी सहारा लिया। इससे वे फूलों की खेती में अग्रणी बने और अब अपने क्षेत्र में नाम कमा रहे हैं।

उन्होंने कार्नेशन के फूलों को 500 वर्ग मीटर के पॉलीहाउस में उगाया है। कमल का कहना है कि फूलों की खेती उन्हें सब्जियों की तुलना में अधिक मुनाफा देती है। सिर्फ कार्नेशन से ही उन्हें सालाना 4-6 लाख तक की कमाई हो जाती है। उनका बाजार दिल्ली और गाजीपुर है जहां उन्हे अपने लगाए फूलों का अच्छा दाम मिल जाता है। कमल देव की कहानी दिखाती है कि किसान मेंहनत, क्षमता और उत्साह से किसी भी कठिनाई को पार कर सकता है।

सपनों के सफर और मुरारी लाल की फूलों की उद्यमिता की कहनी

बगसियाड मंडी के मुरारी लाल की कहानी से हमें प्रेरणा प्राप्त होती है कैसे उन्होंने 56 साल उम्र होने के बावजूद नई दिशा में कदम रखा और फूलों की खेती के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई।

मुरारी जी को बहुत पहले से फूलों की खेती से लगाव था परंतु इसे कैसे अपना व्यवसाए बनाया जाए, इसकी जानकारी नहीं थी। फिर उन्हे अपने किसान समूह से फ्लॉरिकल्चर मिशन की जानकारी मिली और उन्होंने फूलों की खेती में अपना पूरा ध्यान दिया और जल्द ही उसे व्यावसाय में बदल दिया। इससे उन्हें अधिक आय और स्थायित्व मिला। मुरारी जी ने अपने खेती में कार्नेशन और लिलीयम का काम किया है। उन्होंने फूलों के साथ-साथ बगीचा भी लगाया हुआ है। उनके अनुसार, फूलों की खेती उन्हें बगीचे के काम की तुलना में ज्यादा मुनाफा दे रही है।

उन्होंने दो पॉलीहाउस भी लगाए हैं, जिससे उन्हें फूलों की खेती में और भी बेहतर परिणाम मिल रहे हैं। मुरारी जी को फ्लॉरिकल्चर मिशन में शामिल होकर कई नई तकनीकों का पता चला जिससे उन्हे काफी मदद मिली है। उन्हें सीएसआईआर-आईएचबीटी से फूलों की खेती पर ट्रेनिंग भी मिली है जिससे उन्हे बहुत फायदा पहुँचा। पहले जब वे सोचते थे की फूलों की खेती को व्यवसाय के तौर पर कैसे बदले पर आज उनके फूल दिल्ली के बाजारों में मशहूर है। कार्नेशन से मुरारी जी को सालाना 7-8 लाख आमदनी मिलती है और लिलीयम से अभी कमाई शुरू ही की है, लेकिन उन्हें यहाँ भी सफलता मिल रही है।

मुरारी लाल जी की कहानी हमें यह सिखाती है कि किसानी में उत्साह, मेंहनत और नई तकनीकों का सहयोग सफल रह सकता है। उनकी सफलता की यह कहानी हर किसान के लिए प्रेरणादायक है

फूलों की खेती: सपनों को साकार करने का एक उत्कृष्ट विकल्प

सपनों को पूरा करने का सफर हमेशा संघर्षपूर्ण होता है, और इस संघर्ष के बीच, न केवल जज्बा, बल्कि विश्वास भी होना चाहिए। सुरेंदर पाल, जो बिलासपुर, चाँदपुर के निवासी हैं, एक ऐसे संघर्षी किसान हैं जिन्होंने अपने सपनों को पूरा करने के लिए हर मुश्किल को पार किया है। उनकी कहानी एक प्रेरणादायक सफलता की कहानी है, जो उन्होंने फूलों की खेती करके हासिल की है।

सुरेंदर की उम्र 50 साल है और उन्होंने दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई की है। फूलों की खेती में उन्होंने 7-8 सालों का अनुभव हासिल किया है, और इस अनुभव के दौरान उन्होंने जर्बेरा, यूस्टोमा, कार्नेशन, जिप्सो, और लिमोनियम जैसे विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती की है। कुल कृषि भूमि की 2 बिघा में वह फूलों की खेती करते हैं, जो उन्हें सालाना 4-5 लाख रुपये की कमाई देती है।

सुरेंदर ने अपने जीवन के पहले भाग में निजी व्यापार किया, लेकिन वर्ष 2015 में उन्होंने फूलों की खेती करना शुरू किया। उन्हें पता चला कि सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत वह सस्ते दामों में उच्च गुणवक्ता के फूलों के पौधे प्राप्त कर सकते हैं तथा साथ ही उन्हे प्रशिक्षण भी मिला, जो उन्हें अपने उत्पादों की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने में मदद करता है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मे बहुत लाभ हुआ है।

सुरेंदर पाल की कहानी हमें यह बताती है कि जीवन में सफलता पाने के लिए संघर्ष और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है, और फूलों की खेती जैसे क्षेत्र में लगने वाले किसानों को अच्छी तरह से तैयारी और जानकारी की आवश्यकता होती है।

सुरेंदर का संदेश

फूलों की खेती में सफलता पाने के लिए पहले अच्छी तरह से खेती के बारे में जानकारी होनी चाहिए। यह सिर्फ मेहनत और उन्नति का माध्यम ही नहीं है, बल्कि अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का स्त्रोत भी है।

हिमाचल के एक प्रगतिशील किसान का उदाहरण

श्री हितेंद्र प्रकाश, जो ग्राम सुन्नी, डालाना , शिमला, हिमाचल प्रदेश के एक प्रगतिशील किसान हैं, कई वर्षों से विभिन्न क्षेत्रीय फसलों की खेती कर रहे हैं। वे अपने परिवार का पालन करने में सक्षम थे, लेकिन उनकी सोच किसानी से भी लाभ लेने की थी । फिर वर्ष 2018 में, उन्होंने खेती के रूप मे व्यवसायिक कर्तित फूलों की फसल चुनने का निर्णय लिया, जो उनके लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ। वर्ष 2021 में, हितेंद्र प्रकाश को कृषि विभाग, शिमला से सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में पता चला। इसके बाद से, वे सीएसआईआर-आईएचबीटी प्रौद्योगिकियों से जुड़े हुए हैं। समय-समय पर, वे विभिन्न फ्लॉरिकल्चर के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते रहते हैं।

पिछले वर्ष, सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत, हितेंद्र प्रकाश को गुलदाउदी, कार्नेशन, ग्लेडियोलस कॉर्म, और रजनीगंधा की रोपण सामग्री मिली। उनके निरंतर प्रयासों ने उन्हें एक लाभकारी फूलों की खेती का व्यवसाय खड़ा करने में सक्षम बनाया है।

हितेंद्र प्रकाश अपने 3000 वर्ग मीटर के पॉली हाउस और 5000 वर्ग मीटर के खुले खेतों में कार्नेशन, रजनीगंधा, ग्लेडियोलस, और गुलदाउदी की खेती कर रहे हैं, जबकि इन कर्तित फूलों से वह प्रति वर्ष 7-8 लाख के बीच कमाई करते हैं। वे फूलों की फसल को दिल्ली, चंडीगढ़, और शिमला के बाजारों में बेचते हैं, जो उन्हें और उनके परिवार को दिन-प्रतिदिन और भी आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है।

खिलती हुई सफलता: संतवीर सिंह बाजवा की फ्लोरिकल्चर में यात्रा

पंजाब की असली खूबसूरती उसके खेतों से है, और किसान यहाँ की अनमोल धरोहर है, जिनकी मेहनत से इन खेतो मे फसले लगती है। होशियारपुर, पंजाब के संतवीर सिंह बाजवा जी जिनकी कहानी सपनों को साकार करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। सतवीर सिंह जी अपने संघर्ष से, फ्लॉरिकल्चर में अपनी पहचान बनाई है।

उन्होंने अपनी पढ़ाई (बी.ए., एल.एल.बी) के बाद न केवल कानूनी क्षेत्र में काम किया, बल्कि खुद को खेती से जोड़ कर रखा तथा उनकी इसी इच्छा ने उन्हें 10 साल पहले फूलों की खेती करने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही, उनका ऑर्चर्ड भी है, जिसमें वे फलों के साथ गुलाब और जर्बेरा की खेती भी करते हैं। खेती और नौकरी साथ मे करना मुश्किल था, उन्हे बहुत सी दिक्कतों का सामना भी करना पढ़ा परंतु वो डटे रहे, मेहनत कर उन्होने सबके सामने एक मिसाल खड़ी की, कि इंसान चाहे तो कुछ भी कर सकता है।

संतवीर के सपनों को साकार करने के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब उन्हें सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में पता चला। इसके जरिए उन्हें सब्सिडी पर पौधे लेने का मौका मिला, जिससे उनकी खेती की लागत काफी कम हो गई। अब, उनकी खेती मे सीएसआईआर- फ्लॉरिकल्चर मिशन का भी साथ है। चंडीगढ़ की मार्केट मे अपने फूलों को बेचते हुए, संतवीर अपने समुदाय के किसान भाइयों को यह संदेश देते हैं कि वे भी इस मिशन से जुड़ें और इससे लाभ उठाएं।

किसान संदीप कुमार की फ्लॉरिकल्चर में सफलता की कहानी

हिमाचल प्रदेश के चैल, शिमला स्थित एक छोटे से गाँव से निकलती है किसान प्रदीप कुमार की यह अनूठी कहानी, जो फ्लॉरिकल्चर में अपनी मेहनत और जुनून से सफलता की ऊंचाइयों को छू रही है। उनकी खेती में ग्लैड, गुलदाउदी, लिलियम, कार्नेशन और जिप्सोफिला जैसी विभिन्न प्रजातियों के फूलों के साथ-साथ सब्जियां भी होती हैं।

संदीप की कुल खेती के क्षेत्रफल में से 4.5 बीघा में वे फूलों की खेती करते हैं। सीएसआईआर-आईएचबीटी से उन्होंने कार्नेशन और जिप्सोफिला के पौधे खरीदे और उन्हें अपने खेत में लगाया। इसके अलावा, उन्होंने गाँव की कृषि सोसाइटी जो सीएसआईआर- फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुड़ी है, उससे भी मदद प्राप्त की है, उन्हें जिप्सोफिला और कार्नेशन के पौधों व खेती की प्रौद्योगिकी के बारे मे भी जानकारी ली।

उन्होंने अपनी खेती की शुरुआत गुलदाउदी से की, और धीरे-धीरे अन्य फूलों की खेती में भी प्रवेश किया। आज, उनके पास खुद के पॉलीहाउस हैं, जहां वे हर प्रकार के पुष्पीय पौधे लगाते हैं। उनके सभी पॉलीहाउस 4000 वर्ग मीटर क्षेत्र में स्थित हैं।

संदीप के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी का साथ बेहद महत्वपूर्ण रहा है, क्योंकि वहाँ से उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले पौधों मिलते है। पहले वह बिना सब्सिडी के पौधे खरीदते थे, लेकिन सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर के माध्यम से उन्हें बहुत ही कम लागत में पौधे मिल रहे हैं और साथ ही प्रशिक्षण भी लिया , जो उनके लिए बड़ा फायदेमंद साबित हुआ है।

संदीप के सफलता की कहानी उनकी मेहनत और निरंतर प्रयासों का परिणाम है, जो उन्हें फ्लॉरिकल्चर के क्षेत्र में उत्साही और सफल किसान बनाता है। उनकी इस कहानी से हमें यह सिखने को मिलता है कि निरंतर प्रयास और नवाचार केवल एक खेती को ही नहीं, बल्कि जीवन को भी सफल बना सकते हैं।

संदीप के अनुसार, सीएसआईआर आईएचबीटी के इस फ्लॉरिकल्चर मिशन ने किसानों के जीवन मे जैसे एक क्रांति सी ला दी है, जिससे उन्हे सालाना लगभग 6-7 लाख रुपये का लाभ होता है व साथ मे प्रशिक्षण भी मिलता है।

फूलों की खेती: एक किसान की कहानी- विरेंदर कुमार

फूलों की खेती एक ऐसा क्षेत्र है जो न केवल भारत के आर्थिक कृषि जगत मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि इससे जुड़े किसानों के जीवन में भी नई रोशनी लाता है। चलिए आपको विरेंदर कुमार, एक सफल पुष्पीय किसान की कहानी से रूबरू करवाते है, जो फूलों की खेती से प्रदेश भर मे अपना नाम रोशन कर रहे है।

48 वर्षीय विरेंदर कुमार भट्टु समुला, पालमपुर के एक साधारण परिवार से हैं। उनकी खेती का सफर वर्ष 2006 में शुरू हुआ, जब उन्होंने फूलों की खेती करने का निर्णय लिया। विरेंदर कुमार का कहना है कि उनका मुख्य ध्यान कार्नेशन फूलों पर है। वे 3500 वर्ग मीटर क्षेत्र में कार्नेशन लगाते है। इसके अलावा वे कार्नैशन के पौध उत्पादन पर भी कार्य करते है । साथ ही मौसमी सब्जियां भी लगाते हैं।

उनकी खेती से एक साल में उन्हें 8-9 लाख रुपये की कमाई हो जाती है, जिसमें, एक कार्नेशन कटिंग मार्केट में 10-15 रुपये की दर से मिलती है। विरेंदर कुमार के अनुसार, किसानों को कम से कम 2000 वर्ग मीटर क्षेत्र से फूलों की खेती शुरू करनी चाहिए चुकीं छोटे ग्रीनहाउस से अधिक मुनाफा नहीं होता है। विरेंदर कुमार का कहना है कि उन्होंने सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुड़कर बहुत कुछ सीखा है। उनका नियमित तौर पर डॉ. भार्गव द्वारा मार्गदर्शन होता रहता है, जो उन्हें नई तकनीकों और उत्पादों के बारे में समझाते हैं।

विरेंदर कुमार का संदेश

विरेंदर कुमार की भविष्य योजनानुसार, वे अपनी खेती को और विस्तृत करेंगे और अपने उत्पादों का व्यापार बढ़ाएंगे । उनका सपना है कि वह देश भर में अपने फूलों का व्यापार करें तथा अपने क्षेत्र के साथी किसानों को भी फूलों की खेती में आगे बढ़ने मे सहयोग दे ।

फूलों की खेती: सफलता का सफर, छविन्द्र सिंह की दास्तान

भारत के अधिकांश गाँवों मे आज भी खेती एक आत्मीय रोजगार है, और इसी में अपने बढ़ते कदम रखने वाले किसानों की कहानियाँ हमेशा अद्भुत होती हैं। छविन्द्र सिंह जी की कहानी भी ऐसी ही है, जो फूलों की खेती में अपनी सफलता के रास्ते में अग्रसर हैं। छविन्द्र सिंह, गाँव सुनाथ निवासी, एक साधारण किसान परिवार से हैं। उनका उद्देश्य अपने कृषि व्यवसाय को अद्वितीय तरीके से बढ़ाने का रहा है। वर्ष 2016 में छविन्द्रजी ने कार्नेशन और लिली की खेती की शुरुआत की, इसके साथ ही, वे सब्जियों, मक्के और सेब की खेती भी करते हैं। उन्हें फूलों की खेती से बहुत फायदा हो रहा है, जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि हो रही है। छविन्द्र का कहना है कि कार्नेशन की खेती से उन्हें सेब के मुकाबले दोगुनी कमाई होती है।

छविन्द्र सिंह का संदेश

उनका संदेश है कि यदि सरकार की तरफ से प्रशिक्षण व सब्सिडी के बारे में सही जानकारी ली जाए और उसका उपयोग किया जाए, तो कोई भी किसान अपने खेती से लाभ ले सकता है।

छविन्द्रजी की फूलों की खेती में "फ्लावर डेवलपमेंट सोसाइटी" का अहम योगदान है। इस सोसाइटी के माध्यम से उन्हें फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी मिली और उन्हें 1000 कार्नेशन के पौधे भी प्राप्त हुए। छविन्द्रजी का सपना है कि वह और भी अधिक फूलों की खेती करें और अपनी आमदनी में वृद्धि करें। छविन्द्र सिंह की कहानी हमें यह दिखाती है कि किसानों की मेहनत और उनकी लगन से खेती के क्षेत्र मे हर मुश्किल को हल किया जा सकता है। उन्होंने फूलों की खेती के माध्यम से न केवल अपने जीवन को सुखमय बनाया है, बल्कि अपने क्षेत्र में भी आर्थिक विकास का संदेश दिया है।

फूलों की खेती: एक सफल किसान की यात्रा, चमन लाल ठाकुर की दास्तान

गाँवों में खेती करना एक महत्वपूर्ण सामाजिक गतिविधि है जो किसानों के जीवन का आधार बनाती है। खेती में सफलता प्राप्त करना न केवल मेहनत, बल्कि योगदान, नवाचार, और सही मार्गदर्शन का परिणाम होता है। इसी क्रम मे, चमन लाल ठाकुर जी की कहानी भी उनकी व्यापारिक बुद्धिमत्ता और उत्साह का प्रतीक है, जिन्होंने फूलों की खेती में अपनी मेहनत और निष्ठा के माध्यम से सफलता प्राप्त की। चमन लाल ठाकुर, थुनाग, मंडी के निवासी हैं। उनका उद्देश्य गाँव की खेती को उन्नत बनाना और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। वर्ष 2015 से, चमन लालजी फूलों की खेती में लगे हुए हैं। उन्होंने कार्नेशन, लिलीयम और जिप्सोफिला को लगभग 750 वर्ग मीटर क्षेत्र में लगाया है। साथ ही, वे सेब की खेती भी करते है।

चमन लाल का कहना है कि फूलों की खेती से उन्हें सालाना लगभग 6 से 7 लाख तक की कमाई होती है। वे यह महसूस करते है कि फूलों की खेती से उन्हें और उनके परिवार को अधिक आर्थिक सहारा मिल रहा है।

चमन लालजी ने सीएसआईआर-आईएचबीटी में एक ट्रेनिंग के दौरान फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी प्राप्त की। संस्थान से उन्हे पॉलिहाउस मे पुष्प खेती के बारे में और भी जानकारी मिली जिसका उपयोग उन्होंने अच्छे ढंग से किया। उनका मानना है सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन ने उनका जीवन बदल दिया है। चमन लालजी की सोच और सपना है कि वह और भीअधिक फूलों की खेती करें, और अपने क्षेत्र के अन्य किसानों को भी फूलों की खेती में साथ जुड़ने की प्रेरणा दें।

चमन लाल ठाकुर की कहानी हमें यह दिखाती है कि जीवन की सफलता; मेहनत, लगन और उत्साह में है। उन्होंने फूलों की खेती के माध्यम से न केवल अपने जीवन को सुखमय बनाया है, बल्कि अपने क्षेत्र में भी आर्थिक विकास का संदेश दिया है।

फूलों की खेती: जीवन का नया सफर

संजय पांडेजी, चनकपुर, उत्तराखंड का एक प्रेरणादायक नाम है, जिन्होंने अपने उत्साह और मेहनत से फूलों की खेती में नया नाम बनाया है। उनकी कहानी हमें यह दिखाती है कि संघर्ष और सपनों को पूरा करने की जिद्द अगर है, तो किसी भी कठिनाई का सामना करना संभव है।

उनकी उम्र 49 साल है और वे एम.ए पास हैं। वह वर्ष 2007 से फूलों की खेती करते आ रहे हैं, संजय ने अपनी मेहनत से फूलों की खेती में काफी सफलता प्राप्त की है। इसी के चलते उन्हें बलविंदर कंबोज जी का साथ मिले, जिन्होंने उन्हें सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जानकारी दी और उनकी सलाह से सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर मे सब्सिडी पर पौधे भी लिए और प्रशिक्षण भी।

कोविड के दौरान, संजयजी को बहुत नुकसान हुआ था, लेकिन उन्हें आईएचबीटी से बाद में बहुत मदद मिली। इस सब्सिडी के माध्यम से, वह अपनी खेती को पुनः संचालित करने में सक्षम हुए और नए पौधों के उत्पादन में वृद्धि करने में सफल रहे। उनके लिए यह एक महत्वपूर्ण मौका साबित हुआ जिससे उन्हे अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति को सुधारने का अवसर मिला। वह फूलों की खेती से लगभग 6-7 लाख तक की कमाई कर लेते है।

उनके फूलों का मार्केट दिल्ली, लखनऊ और जयपुर में है, जहाँ उनके फूलों की मांग हमेशा अधिक रहती है। उनका कन्स्ट्रक्शन का भी कारोबार है, परंतु उनका मुख्य ध्यान फूलों की खेती पर है।

संजय पांडे की यह कहानी हमें यह बताती है कि किसानों के लिए सपनों को पूरा करने का सफर कभी भी सरल नहीं होता, लेकिन यदि आप निरंतर मेहनत और उत्साह बनाए रखते हैं, तो सफलता आपके कदम चूमने से दूर नहीं रहती।

हरी शंकर पांडे: उत्तराखंड के किसान की अनोखी कहानी

अगर अपने सपनों को पाने के लिए मेहनत और संघर्ष की बात की जाए, तो हरी शंकर पांडे उत्तराखंड के हल्द्वानी के एक ऐसे किसान हैं, जिन्होंने उनके आदर्शों को साकार किया है। हरी शंकर पांडे की कहानी उनकी पढ़ाई से शुरू होती है, जब वे ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई कर चुके थे। लेकिन जीवन ने उन्हें एक अलग दिशा में ले जाने का निर्णय लिया। उन्होंने किसानी का रास्ता अपनाया और फूलों की खेती में अपना मन लगाया। 2022 में फूलों की खेती में कदम रखने के बाद, हरी शंकर पांडे ने अपने खेतों में गेंदा, ग्लैड, जर्बेरा, और गुलाब जैसी विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो की उन्होंने सीएसआईआर-आईएचबीटी की मदद से प्राप्त किए।

सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर की सहायता व उनकी मेहनत के परिणामस्वरूप, उनके खेतों में अब एक विविधतापूर्ण और सुंदर वातावरण बन गया है। उनके फूलों की खेती से न केवल वे अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, बल्कि उन्हें अपने क्षेत्र में एक आदर्श किसान के रूप में माना जाता है। हरी शंकरजी ने सफलता के लिए सोशल मीडिया का भी सहारा लिया। वह कहते है आजकल के समय मे सोशल मीडिया भी एक अच्छा स्त्रोत है जिससे हमे काफी सारी जानकारी डिजिटल माध्यम से भी मिलती है,चाहे वह किसानी हो या पढ़ाई।

हरी शंकर पांडे जी का संदेश;

सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में जबसे जानकारी हासिल की है और फिर वहां से पौधे लेना शुरू किया तब से वह मुनाफे मे ही है। मै अपने किसान भाइयों को इससे जुड़ने की सलाह दूंगा।

हरी शंकर का विक्रय मार्केट हल्द्वानी और रामनगर में है, जो कि उत्तराखंड के प्रमुख मार्केट हैं। उनकी मेहनत और संघर्ष का फल यह है कि उन्हें अब दिल्ली मार्केट में भी उत्पादों की बिक्री का मौका मिल रहा है। फूलों की खेती उनके लिए एक नया अवसर है; यह उनके लिए केवल एक व्यावसायिक संघर्ष नहीं है, बल्कि एक सपनों की पहचान भी है।

गेंदा खेती: एक सफल किसान, महिंदर कुमार की कहानी

मेरा नाम महिंदर कुमार है और मैं हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के धर्मशाला तहसील के एक छोटे से गाँव, घियाना खुर्द का निवासी हूं। हमारा गाँव कृषि में अपने परंपरागत तरीकों से जुड़ा हुआ है, लेकिन मैंने एक नए और उत्कृष्ट तरीके को अपनाने का निर्णय किया - गेंदा खेती।

हमे सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत सीएसआईआर-आईएचबीटी से मिले 1500 गेंदे के पौधों ने एक नई दिशा दी है। शुरुआत में, हमने पूरी मेहनत और जज्बे के साथ गेंदा लगाया, लेकिन पहले साल में प्रतिफल कम था। हमने गेंदा लगाने की तकनीकों में सुधार किया और उसके बाद ही हमें इसमें सफलता मिली।

पहले साल, हमे गेंदे के फूलों को लगाने और उनको बीमारियों से बचाने में कुछ समस्याएं आईं, लेकिन इस अनुभव के बाद हमने अपनी गेंदा खेती को और बेहतर बनाने के लिए कई सुधार किए। दूसरे साल में हमने न सिर्फ फूलों को बेहतर ढंग से लगाया, बल्कि बेहतर आर्थिक लाभ भी कमाया।

गेंदा लगाने से हमारे खेतों की मिट्टी में भी सुधार हुआ और इससे हमारी अन्य फसलों की खेती में भी सुधार होने लगा। हम इसे बारिश के मौसम में लगाते थे, जिसमे हमें किसी भी तरह की समस्या नहीं होती और सर्दीयों में हमे अच्छा मुनाफा होता है। सीएसआईआर-आईएचबीटी की सहायता से हमने नए तकनीकों को सीखा और उन्हें अपनाया। उनका साथ होने से हमें बीज, पौधे व प्रशिक्षण प्राप्त होता रहा जिससे हमें अधिक मुनाफा होने लगा। संस्थान द्वारा दी गई ट्रेनिंग और सहयोग से हमने गेंदा खेती को नए उत्पादन की ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

महिंदर कुमार का संदेश

गेंदे की खेती काफी आसान है और ज्यादा लागत भी नही है । इस फसल से हमें काफी आर्थिक फ़ायदा मिल रहा है , उदाहरण के तौर पर अगर हमने 2 हज़ार के बीज खरीद के भी लगाए तो हमें कम से कम 12 हजार से 15 हज़ार तक की कमाई हो सकती है।

आज, हमने अपनी गेंदा खेती को विस्तारित कर लिया है और अब हम 2 या 3 कनाल तक खेत में गेंदा लगा रहे हैं। गेंदा खेती से हमने बेहतर मुनाफा कमाया है और हमारी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।आने वाले समय में हम और भी नए तकनीकों को अपनाएंगे और अपनी गेंदा खेती को और बेहतर बनाएंगे।

विशाल सिंह: मेरे छोटे गाँव से बड़े सपनों का सफर

मेरा नाम विशाल सिंह है और मैं गाँव करारी नादौन, हमीरपुर का निवासी हूँ। मैंने बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है। मैं गेंदा, ग्लेडियोलस, कार्नेशन और जिप्सोफिला जैसी विभिन्न फूलों की खेती करने के साथ-साथ धान और गेहूँ जैसी अन्य फसलों की भी खेती करता हूँ। मेरे पास 4000 वर्ग मीटर का पॉलीहाउस है, जहाँ मैं इन फूलों की खेती को पाँच साल से कर रहा हूँ।

पहले मैं चंडीगढ़ मे पेट्रोल पम्प पर काम किया करता था, जहां से मुझे किसी ने हिमाचल मे चल रहे सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में बताया । उसके बाद, मैंने सीएसआईआर –आई एच बी टी ,पालमपुर से संपर्क किया तथा संस्थान द्वारा निर्देशानुसार छोटे स्तर पर फूलों की खेती शुरू की।

मेरा पहला कदम कार्नेशन की खेती से शुरू हुआ था। यह फसल काफी फायदेमंद होती है, लेकिन गर्मियों में इसमें दिक्कतें हो सकती हैं। परंतु पॉलीहाउस में गेंदा, ग्लेडियोलस, कार्नेशन, और जिप्सोफिला की खेती करना मेरे लिए एक नए सफर का आरंभ था। मैंने सीखा की, किसी भी खेती में सफलता प्राप्त करने के लिए सही दिशा में कदम रखना व समय पर संस्थान से सही जानकारी जरूरी है। मेरी मेहनत और आत्मनिर्भरता ने मुझे एक सफल किसान बनने की प्रेरणा दी।

COVID-19 के दौरान हुए नुकसान के बावजूद, मैंने नई तकनीकों को अपनाकर अपनी खेती को मजबूती से आगे बढ़ाया। फूलों की खेती सर्दीयों में एक अच्छा रोजगार भी प्रदान करती है, और मैं इसे एक लाख रुपये तक की कमाई में बदलता हूँ।

मैं आत्मनिर्भरता की दिशा में काम करता हूँ, चुकीं मेरी खेती ने मुझे आत्मविश्वास दिया है। सीएसआईआर-आईएचबीटी को धन्यवाद कहना चाहूँगा जहाँ से मुझे सही मार्गदर्शन मिला, जिससे मेरी खेती को और भी सुरक्षित और लाभकारी बनाने का मुझे मौका मिला है।

सुरेश कुमार का मजदूर से आत्मनिर्भर किसान बनने तक का सफर

नरवाना ग्राम, योल, जिला कांगड़ा में बसा हुआ है। वहां के 42 वर्षीय किसान, सुरेश कुमार, वे बताते है, मैं पहले मजदूर था जिस से मझे दिन का सिर्फ 300 रुपया मिलता था, फिर मैने सोचा क्यों न फूलों की खेती की जाए जिस से मेरी आर्थिक स्थिती ठीक हो जाए। मैने फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत आईएचबीटी पालमपुर से प्रशिक्षण लिया और उन्ही से ग्रीनहाउस मे पौधे लगाना व रख-रखाव भी सीखा। आज मेरे पास दो ग्रीनहाउस है जिसमे सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के अंतर्गत,सब्सिडी पर फूलों के पौधे लेकर लाभ उठा रहा हूँ। उन्होंने पिछले दो सालों में फ्लॉरिकल्चर से अपना नाम कमाया है व अपनी आर्थिक स्थिति को भी सुधारा है।

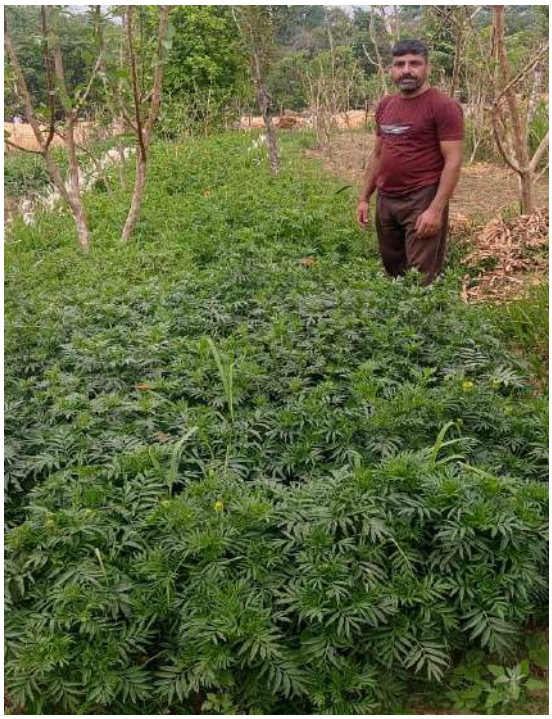

इसके साथ ही, उन्होंने अपने खेत में कनक और सब्जियां भी लगाई हैं, लेकिन उन्हें स्पष्टतः अनुभव मिला कि फूलों की खेती ही उन्हें ज्यादा लाभ प्रदान कर रही है। इस साल, उन्होंने फिर से गेंदे की खेती की , जीससे वे अभी भी लाभ ले रहे हैं। वे आशा कर रहे हैं कि इस बार उन्हें पिछले साल से भी अधिक लाभ होगा, क्योंकि इस बार उन्होंने अधिक क्षेत्र में गेंदे की खेती की हैं।

सुरेश कुमार का संदेश

मैँ लोगों को ये संदेश देना चाहता हूँ कि अगर आप किसान हो, और आपने सब्जियां और फल लगाए हैं तो साथ मे आप गेंदे की खेती भी कर सकते हैं क्योंकि ये काफी लाभदायक है।

उनकी कहानी सिद्ध करती है कि अगर किसान मौसमी खेती के साथ-साथ फूलों की खेती करता है, तो उसे अधिक लाभ हो सकता है। उनके अनुभव से हमें यह सिखने को मिलता है कि नए और अनुप्रयोगिक विचारों का अवलोकन करते हुए, हम अपनी खेती को अधिक मुनाफे का सौदा बना सकते हैं।

गेंदे की खेती ने फेलाई रूबीना की ज़िंदगी मे महक

मेरा नाम रूबीना है और मैं बनखंडी देहरा के पास कांगड़ा की रहने वाली हूं। मैंने अपनी पढ़ाई बारवीं तक की है और आज मैं गेंदे की खेती से अपने क्षेत्र में एक सफल किसान के रूप में मशहूर हूं।

हमारा, फूलों की खेती से जुड़ने में सीएसआईआर - आईएचबीटी फ्लॉरिकल्चर-मिशन का बहुत बड़ा हाथ रहा है। जब हमें सही दामों पर पौधे नहीं मिल रहे थे, तब हमने सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर से उच्च गुणवक्ता वाले गेंदे के बीज लिए, उन्हे दो पॉलीहाउस और बाहरी खेतों मे लगाया। मौसम की मार से ,बाहरी पौधे तो चले नहीं, परंतु पॉलीहाउस से आई फसल को हमने लोकल मार्केट में बेचने का फैसला किया, जिससे हमे बहुत फायदा हुआ। हमारे गेंदे की खेती की सफलता के पीछे की कहानी यह भी है की, हमने उन्हें बगलामुखी मंदिर के पास बेचा, जहां गेंदे के फूलों की मांग थी। इससे हमें आमदनी में सफलता हुई और हमने अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया।

हमने गेंदा लगाने से पहले मक्का, कनक, सब्जी आदि की खेती की थी, लेकिन उससे उतना मुनाफा नहीं हो रहा था। गेंदा लगाने के बाद से हमें मुनाफा ही मुनाफा हो रहा है। हमने 3से 4 कनाल मे गेंदा लगाया है और इससे हमें 70-90 हजार तक का मुनाफा आराम से हो जाता है।

रूबीना जी का संदेश

मैं अपने आस-पास के लोगों को भी यही सिखाती हूं कि फूलों की खेती एक अच्छा व्यवसाय बन सकता है । गेंदे की खेती ने न केवल आर्थिक सुधार किया है, बल्कि हमें अपनी कड़ी मेहनत और सही दिशा में प्रयास करने का एहसास भी कराया है।

गेंदे की खेती ने मेरे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है और मैं आज एक सफल महिला किसान के रूप में महिला सशक्तिकरण का उदाहरण पेश करती हूँ । मेरी कहानी से मुझे आशा है कि अन्य महिला किसान भी इसे प्रेरणा स्रोत मानेंगे और अपने क्षेत्र में नई ऊँचाइयों की ओर बढ़ेंगे।

फूलों की खेती से सपनों की ऊंचाईयों तक- शुभभगत राम वर्माजी की कहानी

शिमला के छोटे से गाँव मशोबरा के एक किसान, शुभभगत राम वर्माजी की उम्र 59 साल है। वह 12-13 साल से फूलों की खेती कर रहे है, उनका यह मानना है कि फूलों की खेती में मेंहनत तो होती है लेकिन कमाई भी अच्छी होती है। वर्मा जी ने मुख्यत: कार्नेशन ही लगाया है। जिससे उन्हे काफी फायदा हो रहा है।

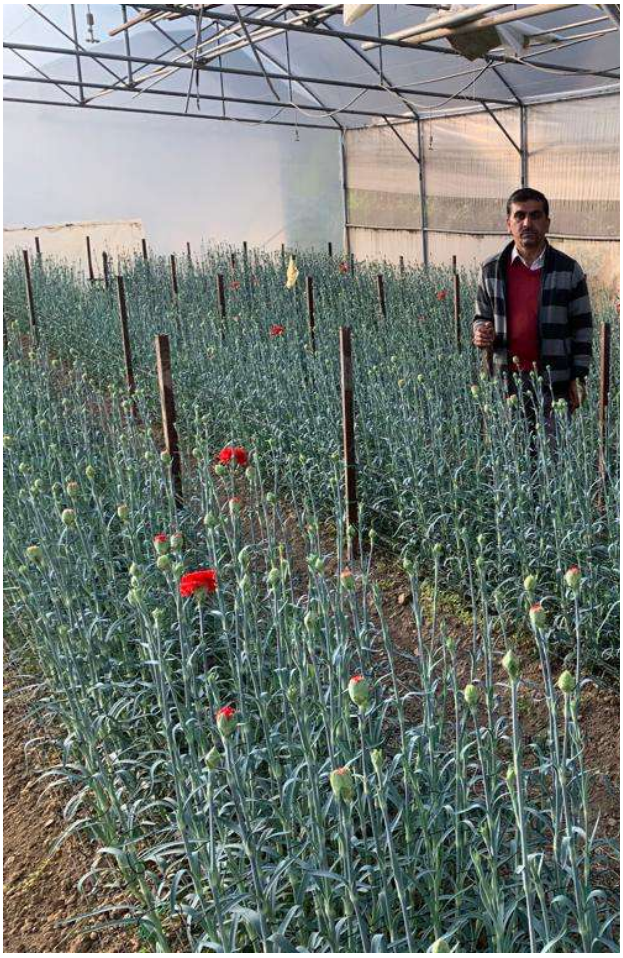

वर्मा जी ने बताया की उन्हे फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में बागवानी विभाग,मशोबरा, शिमला से पता चला और उसके बाद वह सीएसआईआर-आईएचबीटी के संपर्क में आए व संस्थान के फ्लॉरिकल्चर विभाग का पता लगा और वहाँ जाकर बात करने पर मिशन के बारे जानकारी मिली की कैसे सब्सिडि पर किसानो को फूलो की पौध मिलती है व साथ में अन्य ज़रूरी जानकारियाँ भी जिससे फूलो की किसानी में बहुत सहायता मिली।वह बताते है, फूलों की खेती में कम ज़मीन से अधिक फ़ायदा मिलता है। वे लगभग 1.5 बिघा पर फूलों की खेती करते हैं जिससे उन्हे साल का 8-10 लाख तक का फ़ायदा हो जाता है।

उनका यह कहना है कि फूलो की खेती से ज़्यादा फ़ायदा मिलता और अगर सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के तहत उचित सब्सिडी व प्रशिक्षण मिल रहा है तो क्यूँ न उसका फायदा लें और अपने को और समृध बनाए।

वर्मा जी की "मून स्टार फार्मर" नामक सोसाइटी भी है जिसके वह अध्यक्ष है। वह अपने साथ- साथ अपने इलाक़े के अनेक किसानों को फूलो की खेती करने के लिए प्रोत्साहित करते है। शुभभगत राम वर्मा जी का कहना है, पारंपरिक खेती वह बहुत सालो से करते आए है परंतु फूलों की खेती से ही उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया है।

शुभभगत राम वर्मा की कहानी से प्रेरणा मिलती है कि अगर मन में निष्ठा हो, तो किसी भी चीज़ में सफलता पाई जा सकती है।

फूलों की खेती: एक प्रेरणादायक कहानी

प्रेम चंद, नैनीताल, उत्तराखंड के एक छोटे से गाँव पचुनिया के निवासी हैं। यह कहानी एक साहसिक उत्तराखंडी युवा की है, जिन्होंने कोरोना महामारी के समय में अपने जीवन में नए मोड़ और संभावनाओं को खोजा।

प्रेम ने एम. कॉम की पढ़ाई पूरी की है और बाद में नौकरी भी करते थे। लेकिन कोरोना महामारी मे उन्हें भी संघर्ष देखना पड़ा और नौकरी से निकाल दिया गया। उन्होंने स्वयं को बेरोजगार होते हुए देखा और यही समय था जब उन्होंने अपने गाँव में फूलों की खेती की शुरुआत की। पहले उन्हें कई संघर्षों का सामना करना पड़ा, जैसे फूलों की खेती में कोरोना महामारी के दौरान हुए नुकसान का सामना, फिर उच्च गुणवक्ता के पौधों की कमी ,बाज़ार की मंदी हालत आदि । परंतु सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन द्वारा उन्हे दोबारा फूलों की खेती में जीवंत होने का मौका मिला। मिशन के माध्यम से, उन्हें सब्सिडी पर फूलों के पौधे व प्रशिक्षण मिला।

प्रेम चंद का धैर्य और उनकी मेहनत उन्हें फूलों के बाज़ार मे एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने में मदद करता है। हालांकि, अब भी कोरोना के समय के नुकसान का असर महसूस हो रहा है, लेकिन उन्हें आशा है कि वे मिशन की मदद से उभर पाएंगे। वे साल का लगभग 4-5 लाख का मुनाफा कमा लेते है जो धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है।

फूलों की खेती उनके लिए सिर्फ एक आय का स्रोत नहीं है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संघर्ष में स्वयं को अग्रसर करने का एक जरिया है। उनकी यह कहानी आगे बढ़ने और उनकी संघर्ष की दिशा में नए उत्साही युवा को प्रेरित करने में सक्षम है।

फूलों की खेती: अनूठी कहानी हिमाचल की;

मनमोहन ठाकुर, जुंगल गाँव, शिमला हिमाचल प्रदेश के निवासी, फूलों की किसानी के एक योग्य प्रेरणादायक उदाहरण हैं। उन्होंने अपनी योग्यता और उत्साह के साथ फूलों की खेती की शुरुआत की, और इस से अपने गाँव और स्वयं के लिए नए दरवाजे खोले हैं।

एम.कॉम की पढ़ाई के बाद, मनमोहन ने फूलों की खेती में अपनी रुचि प्रकट की। उन्होंने 2000 वर्गमीटर के क्षेत्र में फूलों की खेती की शुरुआत की और ग्रीनहाउस में विशेष रूप से कार्नेशन की खेती शुरू की।

सीएसआईआर-फ्लॉरिकल्चर मिशन के माध्यम से, मनमोहन ने सब्सिडी प्राप्त करके नए पौधों को लगाया जिससे उन्हें नए व्यवसाय की शुरुआत के लिए आर्थिक सहारा मिला। मनमोहन की मेहनत और निष्ठा ने उन्हें मार्केट में एक प्रमुख स्थान प्राप्त कराने में मदद की है। वे फूलों के साथ-साथ सेब की खेती भी करते हैं, जिससे उन्हें विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होती है।उनका फूलों का प्रमुख बाजार दिल्ली है। हालांकि, वे अपने गाँव में भी फूलों की बिक्री करने का प्रयास कर रहे हैं जो देर-सवेर सफल होगा ऐसी वह आशा करते है।

फूलों की खेती मनमोहन के लिए एक नई दिशा और उत्साह का स्रोत है, जो उन्हें अपने गाँव और परिवार के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार करने का मौका दे रही है। अपने अनुभव से उन्हें यह भी समझ आया है कि फूलों की खेती करने में सही समय पर काम करने की महत्वपूर्णता है, जिससे की उन्हे उनकी मेहनत का फल बेहतर रूप से मिल सके।

उत्तराखंड के जगदीश कुमार की प्रेरित करने वाली फूलों की खेती की कहानी

उत्तराखंड के नयागाँव के जगदीश कुमार ने अपने सपनों को पंख लगाने का साहस दिखाया है। उनकी उम्र 44 वर्ष होने के बावजूद, वे फूलों की खेती में नए रास्ते खोज रहे हैं। उन्होंने अपने क्षेत्र में गेंदा और ग्लैड जैसे फूलों की खेती शुरू की है।

जगदीश कुमार की रूचि फूलों की खेती में तब आई जब उन्हें उनके मित्र ने सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन के बारे में बताया। वे बाजपुर में रहते हैं और उनके मित्र द्वारा सीएसआईआर फ्लॉरिकल्चर मिशन द्वारा फूलों की खेती करने की सफलता की कहानी ने उनको प्रेरित किया।

जगदीश ने अपने 5 बिघा जमीन में फूलों की खेती की शुरुआत की है। इसके साथ ही, उन्होंने सब्जियों की खेती भी शुरू की है। पिछले दो वर्षों से वे फ्लॉरिकल्चर मिशन से जुड़े है , और इसका अच्छा लाभ ले रहे है । फूलों की खेती उनके लिए नई आय का स्रोत बन रहा है, जो उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने में मदद करेगा।

जगदीश कुमार की कहानी हमें यह सिखाती है कि जहाँ चाह है,वहाँ राह है। उन्होंने अपने स्वप्न को वास्तविकता में बदलने के लिए कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन उनकी मेहनत और निरंतर प्रयास ने उन्हें सफलता की ओर ले जाने में मदद की है।

परिकल्पना: जैवार्थिकी के उन्नयन हेतु प्रौद्योगिकीय उद्भवता एवं विकास में हिमालयी जैवसंपदा के संपोषणीय उपयोग द्वारा विश्व स्तर पर अग्रणी होना

उद्देश्यः सामाजिक, औद्योगिक, पर्यावरणीय और अकादमिक हित हेतु हिमालयी जैवसंपदा से प्रक्रमों, उत्पादों और प्रौद्योगिकियों की खोज, नवोन्मेष, विकास एवं प्रसार